Tc.No. : GUJHIN00722

पेज: 4, मुल्य 1 रु.

क्रांति समय

संस्थापक / संपादक : सुरेश मौर्या

E-mail: krantisamay@gmail.com, www.krantisamay.com

वर्ष: 1 अंक: 31 , 25 अक्टुबर, बुधवार 2017, सूरत, हिन्दी दैनिक मो. 9879141480

4 ओ ब्लॉक आगम नवकार कॉम्प्लेक्ष, सचीन रेल्वे स्टेशन के पास, सूरत-गुजरात

सार समाचार

सत्येंद्र कुमार संगीत का ये गीत सुनकर आप भी झूमने लगेंगे

नई दिल्ली। बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में बड़ी धूमधाम से मनाया जाने वाले पर्व छठ पूजा की शुरुआत हो चुकी हैं। भगवान भास्कर और छठी मैय्या के लिए किया जाने वाला ये चार दिवसीय त्योहार उत्तर भारत के एक बड़े जनसमूह के लिए भारी महत्व रखता है। पटना में छठ व्रतियों ने नहाए खाए के साथ व्रत की शुरुआत की। गंगा के विभिन्न घाटों पर व्रतियों ने स्नान किया। गंगा से जल भरकर लोग घर ले गए। व्रतियों ने नहाए खाए का प्रसाद तैयार किया। इसको लेकर सोमवार को ही व्रतियों ने पूरी तैयारी कर ली थी। छठ महापर्व के साथ इस उत्सव के पारंपरिक गीत भी हर तरफ गूंजने लगे हैं। इस मौके पर भोजपुरी लोक गायिक सत्येंद्र कुमार संगीत ने सभी लोगों को अपने निराले अंदाज में छठ पूजा की शुभकामनाएं दीं।

सीतापुर में पिता ने तीन मासूम बेटियों को चलती ट्रेन से फेंका

सीतापुर। बेरहम पिता ने तीन मासूम बेटियों को चलती ट्रेन से फेंक दिया। एक बच्ची की मौत हो गई, जबकि दो मासूमों का जिला अस्पताल में इलाज चल रहा है। एक बच्ची रामकोट थाने के गौरा गांव के पास, दूसरी इसी थाना क्षेत्र के भवानीपुर के पास बेहोश मिली, जबकि तीसरी बच्ची का शव मानपुर थाना क्षेत्र के रमईपुर हाल्ट के करीब पाया गया। सीओ सिटी योगेंद्र सिंह ने बताया कि मोतिहारी के एसपी से संपर्क साधा गया है। बच्चियों के बताए अनुसार उसके परिजनों की खोजबीन की जा रही है। जीआरपी एसओ को केस दर्ज करने के निर्देश दिए गए हैं। जानकारी के अनुसार मंगलवार सुबह लगभग चार बजे अमृतसर से बिहार के सहरसा जा रही ट्रेन नम्बर 152101 अमृतसर-सहरसा जनसेवा एक्सप्रेस से तीन मासूम बच्चियों को उसके पिता ने ही फेंक दिया। सुबह लगभग साढ़े सात बजे जिले के रामकोट थाना क्षेत्र के भवानीपुर गांव के पास टहलने निकले दिनेश मिश्रा ने एक बच्ची को रेल पटरी के किनारे बेहोशी की हालत में पड़ा देखा। बेहोश बच्ची को पानी के छींटें मारकर होश में लाया गया। होश में आने पर आठ साल की अल्बुन खातून ने कुछ दूर पहले छोटी बहन को भी फेंके जाने की जानकारी दी। दिनेश ने यूपी डायल 100 के साथ 108 एम्बुलेंस को इसकी सूचना दी और अन्य ग्रामीणों को लेकर दूसरी बच्ची की खोज में जुट गए। लगभग एक किलोमीटर दूर दूसरी बच्ची बेहोशी की हालत में पड़ी मिली। तब तक एम्बुलेंस भी पहुंच चुकी थी। एम्बुलेंस से घायल बच्चियों को जिला अस्पताल लाया गया जहां दोनों का उपचार चल रहा है।

मोतिहारी के हैं रहने वाले:
अस्पताल में होश आने पर पिता की बेरहमी का शिकार हुई आठ साल की अल्बुन खातून ने बताया कि बिहार के मोतिहारी जिले के गांव छोड़िया निवासी अपने पिता इद्रू व मां अबलीना खातून के साथ ट्रेन से जा रही थी। सुबह के समय उसकी मां अबलीना खातून गहरी नींद में सो गई। इसी दौरान उसके पिता उसकी छह वर्षीय बहन सलीना खातून को गेट के पास लेकर पहुंचे और चलती ट्रेन से नीचे फेंक दिया। इसके बाद उसे भी गेट के पास ले गए और फेंक दिया।

झाड़ियों में मिली तीसरी लाश:
दूसरी ओर, दोपहर बाद लगभग तीन बजे मानपुर थाना क्षेत्र के रमईपुर हाल्ट के करीब ग्रामीणों ने झाड़ियों में बच्ची का शव देखकर पुलिस और जीआरपी को सूचना दी। जानकारी पुलिस अधीक्षक मृगेन्द्र सिंह तक पहुंची तो उन्होंने सीओ सिटी योगेन्द्र सिंह से शव की शिनाख्त अस्पताल में भर्ती बच्चियों से कराने की सलाह दी। सीओ सिटी स्वयं घटनास्थल पर गए और बच्ची के शव को जिला अस्पताल में भर्ती अल्बुन खातून को दिखाया। अल्बुन शव देखते ही दहाड़ें मारकर रोने लगी। उसने बताया कि यह उसकी बहन मुन्नी खातून का शव है। अल्बुन के अनुसार मुन्नी खातून उसकी मंझली बहन थी। सीओ सिटी योगेंद्र सिंह ने बताया कि मोतिहारी के एसपी से संपर्क साधा गया है।

पकरिहा जिन..अब्बू का पकरिहा जिन
जिला अस्पताल में होश में आने पर अल्बुन खातून (8 वर्ष) से पुलिस ने घटना के बारे में पूछा। काफी हिचकिचाते हुए अल्बुन बोली-पापा ने पहले उसकी बहन और फिर उसे चलती ट्रेन से फेंक दिया। पुलिस ने अल्बुन से कहा, चिंता मत करो, तुम्हारे पापा को अभी पकड़वाते हैं। इतना सुनते ही अल्बुन जोर-जोर से रोने-चिल्लाने लगी- 'पकरिहा जिन.. हमरे अब्बू का पकरिहा जिन।

' अल्बुन के शब्द सुनकर पुलिसकर्मी व अस्पताल में मौजूद लोगों की आंखें नम हो गईं। लोग बेरहम पिता के प्रति बेटी की ममता की चर्चाओं में मशगूल हो गए।

आजमगढ़ में बोलीं मायावती,

हिन्दू धर्म के ठेकेदारों ने जात पात दूर नहीं किया तो करूंगी बौद्ध धर्म स्वीकार,

आजमगढ़। बहुजन समाज पार्टी की मुखिया मायावती ने चेतावनी दी है कि यदि हिन्दू धर्म के ठेकेदारों ने जात पात व धर्म के नाम पर दलितों का उत्पीडन बंद नहीं किया तो वह बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेंगी। अपने करोडों समर्थकों के साथ उचित समय पर वह हिन्दू धर्म छोड़कर बौद्ध धर्म की दीक्षा ले लेंगी। मायावती ने मंगलवार को आजमगढ़ के रानी की सराय में आयोजित तीन मंडलों (आजमगढ़, बनारस, गोरखपुर) के कार्यकर्ता सम्मेलन में 90 से अधिक विधानसभा के कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों को संबोधित कर रही थीं। माया के निशाने पर सबसे ज्यादा भारतीय जनता पार्टी ही रहीं। उन्होंने कहा कि आरएसएस के एजेंडे पर चलते हुए बीजेपी लगातार दलितों के उत्पीड़न के काम में लगी है। जिस तरह से बाबा साहब भीम राव अंबेडकर ने चेतावनी देकर हिन्दू धर्म की कुरीतियों से छुब्ध होकर 1956 में अपने समर्थकों के साथ बौद्ध धर्म स्वीकार किया था उसी तरह उचित समय पर वह भी हिन्दू धर्म का त्यागकर अपने करोड़ों समर्थकों के साथ बौद्ध धर्म की दीक्षा लेंगी।

अपने एक घंटे 27 मिनट के भाषण में मायावती ने आरएसएस को निशाने पर लेते हुए कहा कि संघ हमेशा से ही आरक्षण और दलितों के खिलाफ रही है अब संघ के एजेंडे पर काम करते हुए भाजपा सरकार लगातार दलितों का उत्पीड़न कर रही है, बीजेपी आरक्षण को खत्म करना चाहती है। उसी एजेंडे के तहत एससी व एसटी के लिए प्रोन्नति में आरक्षण के मामले पर भाजपा कोई कदम

नहीं उठा रही है।

बीजेपी ने रची थी हत्या की साजिश
मायावती ने बीजेपी पर उनकी हत्या की साजिश का आरोप भी लगाया। उन्होंने कहा कि सहारनपुर के शब्बीरपुर में दलितों के दर्जनों आशियानों के जलकर खाक होने के बाद यह साजिश रची गई। इसके तहत मेरे वहां पहुंचने पर आंदोलन कर रहे बसपाईयों के साथ कुछ अराजक तत्वों द्वारा खूनी संघर्ष कराए जाने की साजिश रची गई थी। जिसमें मेरे समर्थकों के साथ ही मेरी भी हत्या कर दी जाती। इसी साजिश के तहत मेरे कार्यक्रम के दौरान वहां हेलीकाप्टर उतरने की परमीशन नहीं दी गई ताकि मै सड़क मार्ग से वहां पहुचूं। यही नहीं वहां महाराणाप्रताप जयंती कार्यक्रम में फूलन देवी की हत्या करने वाले शेरसिंह राणा को मुख्य अतिथि बनाया गया था।

मंडल कमीशन की रिपोर्ट लागू कराने का श्रेय बीएसपी को
अन्य पिछड़ा वर्ग में आने वाली जातियों को आरक्षण दिलवाने वाले मंडल कमीशन की रिपोर्ट को लागू कराने का भी श्रेय लेते हुए मायावती ने कहा कि वीपी सिंह ने अपनी सरकार बनाने के लिए बीएसपी से भी समर्थन मांगा था। बीएसपी ने डा अंबेडकर को भारत रत्न देने और मंडल कमीशन की रिपोर्ट लागू करने की शर्त पर ही अपने तीन सांसदों के समर्थन की बात स्वीकारी थी। वीपी सिंह ने प्रधानमंत्री बनते ही दोनो शर्त पूरी की। बीजेपी को आरक्षण विरोधी करार देते हुए कहा कि उस वक्त बीजेपी ने देशभर में इसके खिलाफ आंदोलन किया था। यही नहीं सरकार से अपना समर्थन भी वापस ले कर सरकार गिरा दी थी।

अंबेडकर की तर्ज पर दिया इस्तीफा
जिस वक्त पं जवाहर लाल नेहरू प्रधानमंत्री थे उस वक्त उनकी कैबिनेट में बाबा साहब अंबेडकर कानून मंत्री थे। उन्होंने नेहरू से तीन बातों पर अमल करवाने के लिए दबाव बनाया था। इसमें महिलाओं को पुरुषो के समान अधिकार दिलाना, एससी एसटी को आरक्षण को ठीक ढंग से लागू कराने के साथ ही अनुच्छेद 340 पर अमल करना शामिल था। इस अनुच्छेद के तहत पिछड़ों को आरक्षण के लिए पिछड़ा वर्ग आयोग की स्थापना करने की व्यवस्था थी। इस पर सरकार के रवैये से नाखुश होकर उन्होने अपने मंत्री पद से इस्तीफा दिया था। उस वक्त भी डा अंबेडकर को संसद में बोलने नहीं दिया गया था। मुझे भी दलितों पर हो रहे उत्पीड़न मसलन रोहित, ऊना कांड व शब्बीरपुर कांड पर बोलने नहीं दिया गया इसलिए राज्यसभा से इस्तीफा दे दिया।

योगी को पूजा पाठ से फुरसत मिले तब तो विकास करें
मायावती ने इस दौरान एक बार फिर से पूर्वांचल राज्य के गठन की वकालत की। कहा कि मैंने अपने शासनकाल में अलग पूर्वांचल राज्य बनाने के लिए प्रस्ताव केंद्र को भेजा लेकिन कुछ नहीं हुआ। अलग राज्य बने बिना पूर्वांचल का विकास संभव नहीं है।

आम जनता ने सोचा कि पूर्वांचल के योगी आदित्यनाथ सीएम बन गए हैं अब शायद इस क्षेत्र का विकास हो लेकिन उन्हें पूजा पाठ से फुरसत मिले तब तो पूर्वांचल के विकास के बारे में सोंचें। वो तो कभी गोरखधाम में तो कहीं अयोध्या में घूम घूमकर पूजा पाठ में ही व्यस्त हैं। बीजेपी के सभी नेता सिर्फ बयानबाजी में आगे हैं काम में नहीं।

निशाने पर नहीं रहे अखिलेश यादव
मायावती ने अपने कुल एक घंटा 27 मिनट के लंबे चौड़े भाषण में समाजवादी पार्टी के मुखिया को निशाने से दूर रखा। मायावती लगातार संघ, बीजेपी व कांग्रेस को ही कोसती रहीं। बार बार मायावती मोदी सरकार की नीतियों व प्रदेश सरकार को विकास समेत कई मुद्दों पर घेरती रहीं लेकिन सपा प्रमुख अखिलेश पर नरम रहीं। मुलायम सिंह यादव के संसदीय क्षेत्र में एक शब्द भी सपा पर न बोलना चर्चा में भी रहा। बार बार बीजेपी की साजिशों व आने वाले चुनाव में उनके प्रत्याशियों को हराने के लिए रणनीति बनाने पर जोर देती रहीं। सावधान करती रहीं कि बीजेपी कुछ भी कर सकती है चुनाव के पहले इसलिए अभी से सतर्क रहें व आम जन के सामने भी बीजेपी के कारनामें का पर्दाफाश करते रहें।

मोदी के कोई भी वादे नहीं हुए पूरे
मायावती ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जितने भी वादे किए थे साढे तीन साल बाद भी एक भी काम जमीन पर नहीं आया। इसलिए मोदी सरकार अपनी नाकामियों पर पर्दा डालने के लिए कुछ भी कर सकती है।

बीजेपी अयोध्या में मंदिर बनवा सकती है, सर्जिकल स्ट्राइक कर सकती है, दाउद से सांठ गांठ करके उसे भारत वापस ला सकती है। लेकिन याद रखना इसमें से कुछ भी हो आपको कुछ मिलने वाला नहीं है। मंदिर आपको रोटी नहीं देगी वह आपकी गरीबी दूर नहीं करेगी। मंदिर बन जाने पर चढावा चढाने से आपकी जेब हल्की होगी वह अलग। ऐसे कई हवा हवाई काम कर सकती है इसलिए जनता को आगाह करना भी हमारा काम है।

इस लड़की के शरीर से पसीने की जगह आता है खून

नई दिल्ली। आपने ऐसे बहुत से लोग देखे होंगे जिन्हें कुछ ज्यादा ही पसीना आता है। अत्यधिक पसीना आने के चलते उनका स्वभाव भी चिढ़चिढ़ा हो जाता है। लेकिन क्या आपका पाला किसी ऐसे शख्स से पड़ा जिसके शरीर से पसीना निकलने की बजाय रक्त निकलता हो। हैरान करने वाला ये मामला इटली का है। यहां एक 21 साल की ऐसी लड़की सामने आई है जिसके चेहरे और हथेलियों से पसीने की जगह रक्त निकलता है। डॉक्टर भी लड़की के इस रोग को देखकर हैरान हैं।

पिछले तीन सालों से इस समस्या से जूझ रही इस लड़की के शरीर पर न तो कई कट मार्क होता है और न ही कोई खरोंच। लेकिन फिर भी न जाने रक्त उसके चेहरे और बाहों पर कहां से आ जाता है। लड़की की हालत इतनी खराब है कि उसने खुद को अलग-थलग कर लिया है। वह तनाव में हैं और डरी-सहमी रहने लगी है। तनाव में उस लड़की का रक्त ज्यादा निकलता है। लड़की का इलाज कर रहे फ्लोरेंस के डॉक्टरों ने इस बीमारी का ध्यान से अवलोकन किया है। उन्होंने इसे हेमेटोहाइड्रोसिस नाम की एक दुलर्भ बीमारी बताया है। ये ब्लड स्वेट की एक दुलर्भ स्थिति है।

हार्दिक पटेल ने कहा– हराने के लिए कांग्रेस का साथ देंगे

नई दिल्ली। पाटीदार आंदोलन के नेता हार्दिक पटेल ने सोमवार को कहा कि वह गुजरात में भाजपा को हराने के लिए कांग्रेस का समर्थन करेंगे। वह राहुल गांधी से 1 से 3 नवंबर के बीच मिल सकते हैं। उत्तरी गुजरात के मंडल में एक रैली को संबोधित करते हुए पटेल ने कहा, 'लेकिन धीरज रखें, तुरंत कांग्रेस को समर्थन नहीं दें।

' पटेल यहां दो घंटे देरी से पहुंचे। उन्होंने स्वीकार किया कि वह अहमदाबाद के उस आलीशान होटल में उस वक्त मौजूद थे, जब कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी भी वहां ठहरे थे। लेकिन वह गांधी से नहीं मिले और इस बारे में अटकलें चलती रहीं।

पटेल पाटीदार समुदाय के हालिया ज्वलंत आरक्षण आंदोलन के नेता रहे हैं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी से मुलाकात की बात तय थी जिसमें एक रोड शो और उत्तर गुजरात में संयुक्त जनसभा भी शामिल है। 24 वर्षीय नेता ने कहा कि कांग्रेस से निमंत्रण मिलने के बाद वह उम्मेद होटल में गए। वहां कांग्रेस के गुजरात प्रभारी अशोक गहलोत से मिला। हालांकि काफी देर हो गई। मैंने होटल में ठहरने की योजना बनाई लेकिन भाजपा वालों ने सीसीटीवी कैमरे का क्लिप लीक कर दिया। क्योंकि यहां हर चीज उन्हीं की संपत्ति है। उन्होंने कहा, मैं यहां देर से पहुंचने का कारण बता सकता हूं। मैं यहां मीडिया के कारण नहीं आ पाया। मैं राहुल से नहीं मिला नहीं तो मीडिया इसे कुछ और उड़ा देता। हालांकि मैं मोदी की तरह आधी रात को कोई नवाज शरीफ से नहीं मिलने जा रहा था।

कांग्रेस के गुजरात प्रदेश अध्यक्ष भरत सिंह सोलंकी ने कहा कि पटेल की राहुल से मुलाकात 1 से 3 नंवबर के बीच हो सकती है। उस समय राहुल नवसृजन यात्रा के लिए यहां होंगे। गहलोत ने भी कई ट्वीट कर सीसीटीवी कैमरा लीक करने पर भाजपा को आड़े हाथों लिया है। हार्दिक पटेल का ट्वीट- मैं राहुल गांधी जी से नहीं मिला लेकिन जब मिलूंगा पूरे हिंदुस्तान को बता के जाऊंगा !! उनके अगले गुजरात दौरे पर हम मिलेंगे !! भारत माता की जय

कांग्रेस प्रभारी अशोक गहलोत के ट्वीट्स –
मैं हार्दिक और जिग्नेश से उम्मेद होटल में मिला। आईबी, पुलिस होटल मे हमारे कमरे खंगाल रही थी। नरेन्द्र मोदी जी, ये गांधीजी के गुजरात में क्या

हो रहा है? हम खुलेआम कहते हैं कि हम उनसे मिले और आगे भी मिलेंगे।

हार्दिक सरदार पटेल का अपमान करने वाली कांग्रेस के एजेंट : रेशमा
पाटीदार आरक्षण आंदोलन समिति को छोड़कर सत्तारूढ़ भाजपा में शामिल हुई रेशमा पटेल ने मंगलवार को आरोप लगाया कि हार्दिक पटेल अब कांग्रेस के एजेंट की तरह काम कर रहे हैं। जबकि कांग्रेस ने पाटीदार समाज के सर्वोच्च नेता सरदार वल्लभभाई पटेल का अपमान किया था। रेशमा ने कहा, हार्दिक गंदी राजनीति पर उतर आए हैं। भाजपा ने पाटीदार समाज की ओबीसी कोटे में आरक्षण देने की मांग को छोड़कर सब मांगें मान ली हैं। भाजपा ने जब भी हमारे समाज को कुछ दिया तब हार्दिक ने उसको लॉलीपॉप बताया। लेकिन वह अब कांग्रेस का गुणगान कर रहे हैं। जबकि वह यह नहीं बता पा रहे कि कांग्रेस ने पाटीदार समाज को ऐसा क्या दिया है। या पाटीदार समुदाय को ओबीसी दर्जा देकर आरक्षण दिलाने पर कांग्रेस का क्या रुख है। उन्होंने कहा कि हार्दिक को पाटीदार आंदोलन से लेना-देना नहीं है। वह हर हाल में भाजपा के विरोध की राजनीति कर रहे हैं।

उन्हें कांग्रेस में खुलेआम शामिल होकर ऐसा करना चाहिए। रेशमा ने आरोप लगाया कि हार्दिक ने आंदोलन के नाम पर पैसे खाए हैं। रेशमा ने अपने बारे में कहा कि वह पहले भी भाजपा से जुड़ी थीं और आंदोलन के दौरान इससे दूर हो गई थीं।

आंखे नम कर देगी इस एक महीने के बच्ची की भूख से...

नई दिल्ली। सीरिया युद्ध की दर्दनाक तस्वीरों की लिस्ट में एक और तस्वीर शामिल हो गई है। एक महीने की सहर की ये तस्वीर आपकी भी आंखे नम कर देगी। सीरिया के पूर्वी घोटा क्षेत्र के हमोरिया इलाके में इस एक महीने की कुपोषित बच्ची की शनिवार को भूख के कारण मौत हो गई। अस्पताल में उसकी तस्वीर एएफपी के साथ काम कर रहे एक रिपोर्टर ने खीचीं। सीरियन ऑब्जर्वेटरी फॉर ह्यूमन राइट्स के अनुसार कुपोषण और भूख से मरने वालों बच्चों में सहर अकेली नहीं है इससे पहले भी एक बच्चा भूख के कारण यहां दमतोड़ चुका है और सैकड़ों कुपोषण का शिकार हैं। सीरिया के इस क्षेत्र में युद्ध के चलते पिछले कई सालों से खाने की आपूर्ति नहीं है। एक महीने के इस बच्चे का नाम है सहर, ये रोने की कोशिश तो करती थी।

दिल्ली सरकार से वित्तपोषित कॉलेजों में सैलरी संकट

कॉलेजों के पास शिक्षक-कर्मचारियों को देने को धन नहीं

नई दिल्ली। 100 फीसद वित्त पोषित कॉलेजों के समक्ष समस्या कॉलेजों से प्रबंध समितियों की फेहरिस्त के इंतजार में डीयू 28 कॉलेजों की प्रबंध समितियों के गठन का मामले के चलते स्थितिडीयू नाम मिलते ही गठित कर देगी नई प्रबंध समितियांकरीब एक साल से अधिक समय नहीं बनी है प्रबंध समितियां दिल्ली विविद्यालय से संबद्ध दिल्ली सरकार के 100 फीसद वित्त पोषित कॉलेजों में अगले महीने शिक्षक और कर्मचारियों को वेतन मिलना मुश्किल है। लिहाजा वेतन न मिलने की स्थिति में कॉलेजों में हंगामा हो सकता है। कॉलेजों के पास शिक्षकों और कर्मचारियों का अक्टूबर महीने का वेतन देने को रुपया नहीं बचा है। बता दें कि इस मामले में अभी हाल में डूटा ने भी उप मुख्यमंत्री से गुहार लगाई थी और उनसे अंतरिम राहत देते हुए फंड जारी करने का अनुरोध किया था। दिल्ली सरकार से वित्त पोषित 28 कॉलेजों में बीते एक साल से प्रबंध समिति नहीं बनी हैं। दिल्ली विविद्यालय और दिल्ली सरकार द्वारा यह प्रबंध समितियां गठित की जाती हैं। डीयू द्वारा दिल्ली सरकार को नाम भेजे जाते हैं, उसके बाद दिल्ली सरकार अपने नाम भेजती है। इसके बाद डीयू अपनी कार्यकारी परिषद में प्रबंध समितियों का गठन कर देती है। लेकिन इस बार प्रबंध समितियों के गठन में देरी होने की दलील देते हुए दिल्ली सरकार के 28 कॉलेजों में होने वाली फंडिंग को रोक दिया है। सरकार द्वारा 12 कॉलेजों में तो 100 फीसद अनुदान दिया जाता है, जबकि 16 कॉलेजों को 5 फीसद अनुदान दिया जाता है। अनुदान न मिलने से 100 फीसद वाले 12 कॉलेजों में भारी संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई है। कॉलेजों को इस महीने की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर को शिक्षक और कर्मचारियों को वेतन देना है। ऐसे में फंड के अभाव में कॉलेज सैलरी नहीं दे पाएंगे। डीयू से संबद्ध व दिल्ली सरकार से 100 फीसद वित्त पोषित दीनदयाल उपाध्याय कॉलेज के प्राचार्य डॉ एसके गर्ग ने बताया कि कॉलेज के पास रुपया नहीं है, लिहाजा अगले इस महीने का वेतन नहीं दे पाएंगे, जबकि तक फंड नहीं मिलता है। शहीद सुखदेव कॉलेज ऑफ बिजनेस स्टडिज की प्राचार्य डॉ पूनम वर्मा ने कहा कॉलेज के पास अब वेतन देने को भी रुपया नहीं बचा है। यदि सरकार से फंड नहीं मिला तो इस महीने के अंत में वेतन नहीं दिया जा सकेगा।

क्या है डीयू प्रशासन का तर्क :
डीयू प्रशासन से जुड़े एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार 21 दिन पहले हमने दिल्ली सरकार को नाम भेज दिए हैं। अब डीयू दिल्ली सरकार से नाम की फेहरिस्त आने की प्रतीक्षा कर रहा है। जैसे ही दिल्ली सरकार से नाम आ जाएंगे, वैसे ही प्रबंध समितियों का गठन हो जाएगा। इसके बाद कॉलेजों को प्रबंध समितियों की सूची भेज दी जाएगी। सरकार से 100 फीसद वित्त पोषित कॉलेज : दीनदयाल उपाध्याय कॉलेज, शहीद सुखदेव कॉलेज ऑफ बिजनेस स्टडीज, अंबेडकर कॉलेज, महाराजा अग्रसेन कॉलेज, शहीद राजगुरु कॉलेज, भास्कराचार्य कॉलेज, केशव महाविद्यालय, वाल्मिकि कॉलेज, भगिनी निवेदिता कॉलेज, अदिति कॉलेज, इंदिरा गांधी कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंसेज, और आचार्य नरेन्द्र देव कॉलेज।

अत्याचार जब निरंकुश होकर नग्न तांडव करने लगता है, तब बलिवेदी पर चढ़ने को तैयार होने के सिवा और कोई भी उपाय नहीं रह जाता -हिन्दू पंच

गुजरात के दाहेज

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के दाहेज में जो कुछ कहा है उसका अर्थ यही है कि विपक्ष के विरोध एवं आलोचनाओं के बावजूद वे आर्थिक मोर्चे पर आगे भी कड़े कदम उठाने का मन बना चुके हैं। उन्होंने कहा भी कि हमने कड़े फैसले लिये हैं और ऐसा करना आगे भी जारी रखेंगे। तो क्या आने वाले दिनों में हमें कुछ और बड़े सुधारों के लिए तैयार रहना होगा? ऐसा लगता है कि प्रधानमंत्री का मुख्य उद्देश्य ऐन चुनाव के समय विपक्ष की नोटबंदी एवं जीएसटी की आलोचनाओं को देखते हुए लोगों तक यह संदेश देना था कि उनके कदम सही थे और इससे अर्थव्यवस्था को लाभ मिला है। मोदी सरकार पर विपक्ष अर्थव्यवस्था का भट्ठा बैठा देने का भी आरोप लगा रहा है और इसके लिए विकास दर के 5.7 तक गिर जाने को प्रमाण के रूप में पेश करता है। अर्थव्यवस्था और आर्थिक नीतियां अभी तक गुजरात में बड़ा चुनावी मुद्दा बनता दिख रहा है। इसमें प्रधानमंत्री के लिए यह आवश्यक हो गया था कि वे विस्तार से इस पर बात करें एवं अर्थव्यवस्था के ठीक होने का विास दिलाएं। उन्होंने यही किया। मसलन, उन्होंने कहा कि कठोर सुधारों के बाद अर्थव्यवस्था पटरी पर लौटी है और सही दिशा में आगे बढ़ रही है। बहुत से अर्थशास्त्री इस बात पर सहमत हैं कि अर्थव्यवस्था की बुनियाद मजबूत है। राजकोषीय स्थिरता को कायम रखते हुए हम ऐसा करना जारी रखेंगे। प्रधानमंत्री के इन दावों पर जनता कितना विास करेगी इसका फैसला भविष्य में होगा।

यह बात सही है कि दो तिमाही में विकास दर गिरने का मतलब अर्थव्यवस्था का रसातल में पहुंच जाना नहीं है। भारतीय और नियंतग्र संस्थाएं बता रहीं हैं कि भारत की अर्थव्यवस्था तात्कालिक हिचकोले से शीघ्र ही उबरेगी और अगले वर्ष तक फिर से विश्व में सबसे तेज बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बन जाएगी। यह भी सच है कि नोटबंदी एवं उसके तुरंत बाद जीएसटी लागू करने से व्यापार पर विपरीत असर पड़ा है।

इसके असर से उबरने में समय लगेगा। सरकार ने पिछले दिनों जीएसटी परिषद की बैठक बुलाकर कई संशोधनों द्वारा इसे राहतकारी बनाने का कदम उठाया। स्वयं प्रधानमंत्री ने इसके पहले कहा था कि जरूरत पड़ी तो आगे भी बदलाव किए जाएंगे। हमारा मानना है कि नोटबंदी और जीएसटी अब एक यथार्थ है, इसके सही गलत पर बहस करने की बजाय इसके परिणामों पर अध्ययन हो और उसके तात्कालिक विपरीत प्रभावों का अंत करने के लिए कदम उठाए जाएं।

क्रिकेट की हार

रविवार यानी 22 अक्टूबर का दिन भारतीय खेलों के हिसाब से खुशियां भरा दिन रहा। इस दिन भारत ने लगभग एक दशक बाद एशिया कप हॉकी का खिताब जीता। किदाम्बी श्रीकांत ने डेनमार्क ओपन के रूप में कॅरियर का पांचवां सुपर सीरीज खिताब जीता। वहीं गगनजीत भुल्लर ने मकाऊ ओपन का गोल्फ खिताब जीतकर खुशियों को और बढ़ाया।

इन खुशियों में भारतीय कप्तान विराट कोहली ने अपने कॅरियर के 200 वें वनडे मैच में शतक जमाकर रिकी पोंटिंग (30) को पीछे छोड़कर अपने को सचिन तेंदुलकर (49) के बाद दूसरे स्थान पर पहुंचा दिया। पर इन खुशियों के बीच भारतीय खेल प्रेमियों को एक तगड़ा झटका भी लगा। भारतीय टीम न्यूजीलैंड से पहले वनडे मैच में हार गई। हम सभी जानते हैं कि देश में क्रिकेट सबसे लोकप्रिय खेल है, फिर भी देशवासियों ने क्रिकेट की हार में बाकी खुशियों को दबने नहीं दिया। एशिया कप हॉकी की बात करें तो भारत यह खिताब 2007 के बाद हासिल कर सका है। इसके साथ ही हम एशियाई स्तर पर अपना पूरा दबदबा बनाने में सफल हो गए हैं। इससे पहले भारत के पास एशियाई खेलों, एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी और एशियाई अंडर-18 ट्रॉफी के खिताब पहले से था। इस जीत से भारत के नये कोच सोर्ड मारिने पर सफलता का ठप्पा लग गया है। लेकिन उनकी असल परीक्षा भुवनेश्वर में एक से 10 दिसम्बर तक होने वाली वर्ल्ड हॉकी लीग के फाइनल्स में होनी है। इसमें भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और जर्मनी में से किन्हीं दो को हराकर अगले चरण में पहुंच सकी तो लगेगा कि भारतीय हॉकी की कमान सुरक्षित हाथों में है।

बैडमिंटन में श्रीकांत ने दक्षिण कोरिया के ली हयुन इल को हराकर यह खिताब जीता। इससे पहले यह खिताब भारतीय शटलरों में प्रकाश पादुकोण ने 1979 में जीता था। वहीं भुल्लर की सफलता के भी कम मायने नहीं हैं। हां, इतना जरूर है कि भारतीय क्रिकेट टीम ने भी न्यूजीलैंड को फतह कर लिया होता तो खेलप्रेमियों की खुशी दोगुनी हो जाती। उस स्थिति में कोहली का कॅरियर का 200वां मैच भी यादगार बन सकता था। अब तो इन खुशियों में ही खुश रहने की जरूरत है।

“गुजरात गौरव यात्रा

नरेन्द्र मोदी को ``गुजरात दुश्मन' की खोज थी, जो उन्होंने बड़ी आसानी से गढ़ लिया। अपनी राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस और उसके नेता राहुल गांधी को और वास्तव में जवाहरलाल नेहरू से लेकर राहुल गांधी तक गांधी-नेहरू परिवार को गुजरात और गुजराती-दुश्मन बनाकर पेश करने में उन्हें क्यों कोई संकोच होता? उन्होंने सरदार पटेल से लेकर मोरारजी देसाई तक और दूसरे भी कई नेताओं के साथ ``अन्याय' की खासी लंबी झूठी-सच्ची सूची पेश की। उन्होंने सरदार सरोवर परियोजना से लेकर, राजस्थान से पानी तक के मामलों में गुजरातियों के साथ हुए।

सतीश पेडणोकर

गुजरात में विकास सचमुच पागल हो गया लगता है। इसमें किसी को कोई शक-शुबहा रहा भी होगा, तो कम-से-कम अब, गुजरात की राजधानी, गांधीनगर में नरेन्द्र मोदी की सोमवार, 16 अक्टूबर की बहुप्रचारित रैली के साथ दूर हो जाना चाहिए। बेशक, अपनी पार्टी की 15 दिन की ‘‘गुजरात गौरव यात्रा' के समापन के मौके पर हुई रैली में, जिसे भाजपा कार्यकर्ताओं की सबसे विशाल रैली के रूप में प्रचारित किया जा रहा था, प्रधानमंत्री ने बार-बार अपने और अपनी पार्टी के ‘‘विकास' का पक्षधर होने का दावा किया। यहां तक कि उन्होंने इसका एलान भी कर दिया कि गुजरात का आने वाला चुनाव, ‘‘विकासवाद बनाम वंशवाद' के बीच होगा। लेकिन इसके बावजूद वास्तव में वह न सिर्फ गुजरात के चुनाव को खुद अपने और राहुल गांधी के बीच एक द्विध्रुवीय, ‘‘व्यक्तित्वों का मुकाबला' बनाने की प्रवृत्तियों को ही हवा देते नजर आए, प्रधानमंत्री जोर-शोर से विकास के लाभों का कोई तर्क पेश करने के बजाए, गुजराती जनता को भावनाओं के ज्वार में बहाने की ही कसरत करते नजर आए। इस रैली से अपनी पार्टी के चुनाव प्रचार की आधिकारिक रूप से शुरुआत करते हुए नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के चुनाव के लिए भाजपा के प्रचार को मजबूती के साथ गुजराती गौरव, गुजराती अस्मिता आदि के नारों से बांधने का भी रास्ता दिया, जो विकास को एक रस्मी नारा मात्र बनाकर रख देने वाला है। जाहिर है कि गुजराती गौरव की दुहाई को चलाने के लिए, नरेन्द्र मोदी को ‘‘गुजरात दुश्मन' की खोज थी, जो उन्होंने बड़ी आसानी से गढ़ लिया। अपनी राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस और उसके नेता राहुल गांधी को और वास्तव में जवाहरलाल नेहरू से लेकर राहुल गांधी तक गांधी-नेहरू परिवार को गुजरात और गुजराती-दुश्मन बनाकर पेश करने में उन्हें क्यों कोई संकोच होता? उन्होंने सरदार पटेल से लेकर मोरारजी देसाई तक और दूसरे भी कई नेताओं के साथ ‘‘अन्याय' की खासी लंबी झूठी-सच्ची सूची पेश की। उन्होंने सरदार सरोवर परियोजना से लेकर, राजस्थान से पानी तक के मामलों में गुजरातियों के साथ हुए अन्याय गिनाए। और इस सब को शीर्ष पर ले जाते हुए उन्होंने, खुद अपनी गिरफ्तारी के षडयंत्र रचे जाने का भी आरोप लगाया। अपने जोड़ीदार, अमित शाह की गिरफ्तारी की ओर इशारा करते हुए उन्होंने दावा किया कि शाह की गिरफ्तारी के पीछे वास्तव में असली निशाने पर तो मोदी ही थे! वैसे यह कार्यनीति तो मोदी इससे पहले भी, 2002 के अल्पसंख्यक विरोधी नरसंहार की पृष्ठभूमि में हुए गुजरात के आम चुनाव में ‘‘शानदार' कामयाबी के साथ आजमा चुके थे और नरसंहार के कांग्रेस समेत सभी आलोचकों को ‘‘पांच करोड़ गुजरातियों' का दुश्मन बनाकर खड़ा कर के, कथित गुजराती गौरव को वोटों में तब्दील कर के दिखा चुके थे। याद रहे कि यह ‘‘गुजराती गौरव' जितना शेष गैर-गुजरातियों के विरुद्ध था उतना ही खुद गुजरातियों के एक हिस्से यानी घोषित रूप से मुसलमानों के और अघोषित रूप से दलितों व आदिवासियों के भी विरुद्ध था। यही वह चुनाव था जिसमें खुद नरेन्द्र मोदी ने नरसंहार के बाद काम कर रहे अल्पसंख्यकों के शरणार्थी कैंपों को ‘‘बच्चे पैदा करने वाली फैक्टरियां' बताया था और ‘‘हम पांच, हमारे पच्चीस' का हामी करार देकर, मुसलमानों पर हमला किया था। यानी यह गुजराती हिन्दू अस्मिता और गुजराती हिन्दू गौरव का ही मामला था। फिर भी, इस बार के चुनाव में 2002 की कार्यनीति के कुछ तत्व नहीं बल्कि पूरी कार्यनीति ही दुहरायी जा रही नजर आती है। लेकिन, इससे कोई यह न समझे कि इस बार गुजरात में भाजपा का चुनाव अभियान, विकास के प्रश्नों से दूर भले रहे, सांप्रदायिक दुहाई से भी दूर ही रहने वाला है और बिना किसी भेद के सभी गुजरातियों को लेकर चलने जा रहा है। मोदी की भाजपा बखूबी जानती है कि वह गुजराती गौरव की अपनी झूठी दुहाई को, हिन्दुत्व की खपच्चियों के सहारे ही खड़ा कर सकती है। अचरज की बात नहीं है कि खासतौर पर गुजरात में उसकी शुरुआत, मोदी की इस चुनाव की पहली औपचारिक रैली से पहले ही हो चुकी थी, जब गुजरात में प्रचार के लिए, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और गोरखपुर की गोरखनाथ पीठ के प्रमुख, योगी आदित्यनाथ को उतारा गया था। अपनी अतिरिक्त रूप से चमकाई गई हिन्दुत्ववादी छवि के साथ आदित्यनाथ ने गुजरात में अपने भाषणों में राहुल गांधी को घेरने की कोशिश की तो, राहुल के गुजरात के अपने दौरे के क्रम में विभिन्न मंदिरों के दर्शन करने के मुद्दे पर। बाद में पड़ोसी मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री, शिवराज सिंह चौहान ने भी हमले की इसी लाइन को जारी रखा।

जाहिर है कि इस हमले का मकसद हिन्दू होने के नाम पर ही गुजरातियों को भाजपा के पीछे और जाहिर है कि उसके विरोधियों के खिलाफ लामबंद करना था। आने वाले दिनों में हम इस प्रक्रिया को और तेज होता ही देखेंगे। हां! यह देखना दिलचस्प होगा कि खुद प्रधानमंत्री मोदी सीधे गुजराती गौरव के इस हिन्दूकरण में भागीदारी करते हैं या चतुर श्रम विभाजन के तहत इसे आदित्यनाथों के ही भरोसे छोड़े रहते हैं। वैसे प्रधानमंत्री ने अपने विरोधियों और खासतौर पर कांग्रेस पर सांप्रदायिकता का सहारा लेने का आरोप लगाकर, इस यज्ञ में खुद अपने हाथों से समिधा डालने का भी संकेत तो कर ही दिया है। संघ-भाजपा की शब्दावली में यह आरोप वास्तव में, अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण का आरोप है, जो अल्पसंख्यक विरोधी गोलबंदी का उनका जाना-पहचाना हथियार है। याद रहे कि उप्र के चुनाव में प्रधानमंत्री इसी रास्ते चलकर, ‘‘कब्रिस्तान बनाम श्मशान' और ‘‘दिवाली बनाम रमजान' की दुहाइयों तक पहुंचे थे! बेशक, आने वाला समय बताएगा कि इस रास्ते चलना भी भाजपा को गुजरात में लगातार पांचवी बार जीत दिला पाता है या नहीं। फिलहाल, इतना तय है कि मोदी इस चुनाव में जोखिम नहीं लेना चाहते हैं। यहां वैसे भी मुख्यमंत्री के कुर्सी पर होते हुए भी, पूर्व-मुख्यमंत्री और वर्तमान प्रधानमंत्री की तस्वीर पर ही चुनाव लड़ा जा रहा है। इस चुनाव में बदहवास संघ-भाजपा अपना सांप्रदायिक चेहरा ज्यादा से ज्यादा चमकाएंगे।

चलते चलते

‘‘बौद्धिक खुराक'

गीता के कतिपय महत्त्वपूर्ण अंश इस प्रकार हैं-धंधा हर आइटम धंधा है या धंधे की संभावना है। अभी दिल्ली में हल्ला हुआ कि प्रदूषण बहुत खराब हालत में पहुंच गया है। घर तक में सांस लेने में खतरा है। हाय-हाय अब मरे। पर, पर, पर फिर देखा यह गया कि तरह-तरह के एयर प्यूरी फायरों के इश्तिहार आने शुरू हो गए। तरह-तरह के एयर-प्यूरीफायर इश्तिहार यह बताने लगे कि किस तरह से उन्हीं के एयर प्यूरीफायर से आपकी सांस बच सकती है। प्रदूषण किसी के लिए समस्या है, किसी के लिए कारोबार है। और सिर्फ कारोबार ही नहीं, चकाचक कारोबार है। एक इश्तिहार बता रहा था कि आपने जो सांस ली है, मतलब वह कोबरा के जहर से भी ज्यादा जहरीली है। आपने तो बहुत ज्यादा गलती कर दी सांस लेने में। मतलब हम से एक बार कंसल्ट किया होता। अब

यह गया कि तरह-तरह के एयर प्यूरी फायरों के इश्तिहार आने शुरू हो गए। तरह-तरह के एयर-प्यूरीफायर इश्तिहार यह बताने लगे कि किस तरह से उन्हीं के एयर प्यूरीफायर से आपकी सांस बच सकती है। प्रदूषण किसी के लिए समस्या है, किसी के लिए कारोबार है। और सिर्फ कारोबार ही नहीं, चकाचक कारोबार है। एक इश्तिहार बता रहा था कि आपने जो सांस ली है, मतलब वह कोबरा के जहर से भी ज्यादा जहरीली है।

भी देर ना हुई है, आइये हमारा एयर प्यूरीफायर ले जाइए और हवा शुद्ध कर लीजिए। अभी यह पक्का ना हुआ है कि इन एयर प्यूरीफायरों से हवा साफ होती है या नहीं, पर यह पक्का हो गया है कि एयर प्यूरीफायर कंपनियों की सेल, उनके मुनाफे चकाचक बढ़ लिये हैं। समस्या आपके लिए समस्या है, किसी के लिए तो धंधा है चकाचक। हर बवाल धंधा है, हर सवाल धंधा है। सो हे वत्स बवाल, सवाल ना देख, उनके पीछे छिपे धंधे देख। नासमझ शिकायत करते हैं कि पानी गंदा है। समझदार बोतलबंद पानी का प्लांट लगाकर करोड़ों कमाते हैं और फिर उन करोड़ों से एमपी,एमएलए या जल संसाधन मंत्री तक बन जाते हैं, फिर वे यह तय कर सकते हैं कि पानी हमेशा ही समस्या बना रहे। पानी गंदा है-यह सिर्फ समस्यात्मक वाक्य ही नहीं धंधात्मक वाक्य भी है। क्या कहा-दिल्ली में गाजीपुर के पास कूड़े का पहाड़ है। हे वत्स तुझे कूड़े का पहाड़ ही दिखाई पड़ रहा है। धंधे का पहाड़ देखने की आंखें पैदा कर। इंश्योरेंस पॉलिसीवाला अभी एक पॉलिसी लेकर आएगा-कूड़ा-पहाड़ पॉलिसी। जो भी शख्स कूड़े के पहाड़ के आसपास से गुजरेगा, उसे यह पॉलिसी बेची जाएगी। उसे समझाया क्या बाकायदा डराया जाएगा। इसलिए गंदी हवा, गंदे पानी और कूड़े के पहाड़ में धंधा देखने की नजर पैदा कर, वत्स, यही असली ज्ञान है।

जातीय विषमता का जहर और आरक्षण की आग

आभा स्वामी

हरियाणा और उसके आसपास का बड़ा इलाका जाट समुदाय की आरक्षण की मांग की आग में झुलस गया। इन मांगों का कभी अंत भी नहीं होगा। समानता व सामाजिक उत्थान के लिए आरक्षण की मांगों के पक्ष में कुछ भी तर्क दिए जाएं, लेकिन मुट्ठीभर लोगों का ही भला करने वाले इस तरीके से न तो समानता आने वाली है और न ही समाज में जातियों का जहर मिटने वाला है। समानता और असमानता की सबसे ठोस परिभाषा इतिहास में अब तक वर्ग संघर्ष के रूप में सामने आई है। वर्ग का काम है सभी जातियों-उपजातियों को अपने में समाहित कर लेना और एक ऐसी आर्थिक श्रेणी का निर्माण करना जिसके सभी सदस्यों का हित समान हो। दुर्भाग्य से कहीं भी यथार्थ में इसकी परिणति नहीं हो पाई है। किसी भी समाज में इतने स्तर होते हैं कि उनके बीच समानता संभव नहीं हो पाती और इसलिए एकता भी एक स्वप्न बनी रहती है। भारत में अनेक सिद्धांतकार दलितों और ओबीसी के बीच प्रगतिशील गठबंधन की खोज करते रहे हैं, जो सिर्फ इसलिए संभव नहीं हो पाया है कि दोनों समाज अर्थिकता के दो पैमानों पर स्थित हैं, बल्कि इसलिए भी कि एक ने दूसरे का शोषण और अपमान करना अभी तक छोड़ा नहीं है। काश, जाति किसी भी समूह को तो जोड़ती। असमानता या विषमता कई फनों वाला सांप होती है। उसकी दुम में भी विष होता है। यह अकारण नहीं है कि उच्च वर्णों की देखादेखी पिछड़ी और निम्न जातियां भी विभिन्न् जातियों-उपजातियों में विभाजित हैं, जिसका असर आरक्षण जैसी कल्याणकारी योजना पर पड़ा है, जिसकी परिकल्पना जातियों के एकीकरण के आधार पर की गई थी। जहां दलितों को दलित और महादलित की कोटियों में बांटा गया है, वहां आरक्षण ज्यादा कारगर साबित हुआ है। यह एक तरह से जाति में आर्थिक आधार को प्रविष्ट कराने का यथार्थवादी नजरिया है। कुछ राज्यों में उच्च वर्ग के गरीब सदस्यों को आरक्षण की पेशकश की जा रही है। दिलचस्प है कि इसमें मायावती अग्रणी हैं, क्योंकि वे जानती हैं कि सत्ता पाने के लिए दलित एकता काफी नहीं है। दूसरे शब्दों में जाति को आर्थिक सफलता या विफलता से अलग नहीं रखा जा सकता। और यही तत्व जाति के विनाश का सबसे मजबूत आधार हो सकता है। जाति प्रथा को समाप्त करने और सामाजिक समानता लाने के लिए डॉ. आंबेडकर ने भी अंतरजातीय विवाह की वकालत की थी। लेकिन भौतिक समस्याओं के भावुक समाधान नहीं हुआ करते। कोई जाति तोड़ने के लिए विवाह नहीं करता, बल्कि विवाह करने के लिए जाति तोड़ता है। महात्मा गांधी बहुत दिनों तक मानते रहे कि जाति प्रथा के सात्विक रूप में कोई बुराई नहीं है, यदि इसे श्रम विभाजन माना जाए और सभी जातियों का समान रूप से सम्मान किया जाए। आज भी सामाजिक न्याय को भारतीय समाज का उच्चतम आदर्श माना जाता है। यह एक ऐसा मिथक है जिसने आर्थिक तथा अन्य प्रकार के न्यायों को अपने घटाटोप से ढंक रखा है। स्मरणीय है कि भारतीय संविधान की प्रस्तावना में आर्थिक न्याय को सामाजिक न्याय के तत्काल बाद स्थान दिया गया है। स्वतंत्रता, समानता और लोकतंत्र उतने अमूर्त नहीं हैं, क्योंकि हम इन्हें अपने जीवन में प्रतिक्षण अनुभव करते हैं और पहचानते हैं। जो समाज अपने भीतर से जाति के जहर को मिटाना चाहता है उसे जाति पर नहीं, तीव्र आर्थिक विकास और उस विकास में सबकी संभवतम हिस्सेदारी के बारे में सोचना चाहिए। जाति को समानता की राह का रोड़ा मानकर उसे हटाना भावुकता ही नहीं, नादानी भी है। कोई सचमुच इस बारे में सोच-विचार करना चाहता है तो उसे उन परिस्थितियों पर अपनी नजर केंद्रित करनी चाहिए जो जाति को पैदा करती हैं और उसे बनाए रखती हैं।

सत्संग

‘‘एक राजा की कथा

मनुष्य शुभ है या अशुभ?' मैंने कहा स्वरूपत: शुभ। और, इस आशा व अपेक्षा को सबल होने दो। क्योंकि जीवन उर्ध्वगमन के लिए इससे अधिक महत्त्वपूर्ण और कुछ नहीं है। ‘‘एक राजा की कथा है, जिसने कि अपने तीन दरबारियों को एक ही अपराध के लिए तीन प्रकार की सजाएं दी थीं। पहले को उसने कुछ वर्षो का कारावास दिया, दूसरे को देश निकाला और तीसरे से मात्र इतना कहा : ‘‘मुझे आर्श्चय है-ऐसे कार्य की तुमसे मैंने कभी भी अपेक्षा नहीं की थी!' और जानते हैं कि इन भिन्न सजाओं का परिणाम क्या हुआ? पहला व्यक्ति दुखी हुआ और दूसरा व्यक्ति भी तीसरा व्यक्ति भी। लेकिन उनके दुख के कारण भिन्न थे। तीनों ही व्यक्ति अपमान और असम्मान के कारण दुखी थे। लेकिन पहले और दूसरे व्यक्ति का अपमान दूसरों के समक्ष था, तीसरे का अपमान स्वयं के। और, यह भेद बहुत बड़ा है। पहले व्यक्ति ने थोड़े ही दिनों में कारागृह के लोगों से मैत्री कर ली और वहीं आनंद से रहने लगा। दूसरे व्यक्ति ने भी देश से बाहर जाकर बहुत बड़ा व्यापार कर लिया और धन कमाने लगा। लेकिन, तीसरा व्यक्ति क्या करता? उसका पश्चाताप गहरा था, क्योंकि वह स्वयं के समक्ष था। उससे शुभ की अपेक्षा की गई थी। उसे शुभ माना गया था। और, यही बात उसे कांटे की भांति गड़ने लगी और यही चुभन उसे ऊपर भी उठाने लगी। उसका परिवर्तन प्रारंभ हो गया, क्योंकि जो उससे चाहा था, वह स्वयं भी उसकी चाह से भर गया था। शुभ या अशुभ, शुभ के जन्म का प्रारंभ है। सत्य पर विास, उसके अंकुरण के लिए वष है। और, सौंदर्य पर निष्ठा, सोये सौंदर्य को जगाने के लिए सूर्योदय है। स्मरण रहे कि तुम्हारी आंखें किसी में अशुभ को स्वरूपत: स्वीकार न करें। क्योंकि, उस स्वीकृति से बड़ी अशुभ और कोई बात नहीं। क्योंकि वह स्वीकृति ही उसमें अशुभ को थिर करने का कारण बन जाएगी। अशुभ किसी का स्वभाव नहीं है, वह दुर्घटना है। और, इसलिए ही उसे देखकर व्यक्ति स्वयं के समक्ष ही अपमानित भी होता है। सूर्य बदलियों में छिप जाने से स्वयं बदलियां नहीं हो जाता है। बदलियों पर विास न करना-किसी भी स्थिति में नहीं है। सूर्य पर ध्यान हो, तो उसके उदय में शीघ्रता होती है।

मुद्दा

छात्रों को बेहतर जीवन

13 सितम्बर को बिहार सरकार ने पटना में आईटी और आईटीई क्षेत्रके लिए निवेशकों की एक बैठक का आयोजन किया। उद्देश्य था कि आईटी, आईटीई और इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम डिजाइन और निर्माण (ईएसडीएम) क्षेत्रों में बड़े स्तर निवेश आकर्षित करने की गरज से निवेशकोन्मुख माहौल बनाने के लिए राज्य सरकार के स्तर पर की जा रहीं पहल और विकासात्मक प्रयासों की बाबत बताया जा सके। गौरतलब है कि बीते बारह वर्ष के दौरान नीतीश सरकार ने निवेश आकर्षित करने के लिए ऐसी अनेक बैठकें आयोजित की हैं। लेकिन सरकार को अपने प्रयासों में ज्यादा सफलता नहीं मिल पा रही। इसलिए कि बिहार में शिक्षा पण्राली की दशा कोईबेहतर नहीं है। विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को संस्थानों का संबल नहीं मिल पा रहा। ऐसे में शैक्षणिक सुधारों में निवेश करके संस्थानों की विफ्लता से पार पाया जा सकता है। आज बिहार शैक्षणिक दुर्दशा के दुष्चक्र में फंसा है। 2017 के शैक्षणिक वर्ष में बारहवीं के साठ प्रतिशत से ज्यादा छात्र अनुत्तीर्ण घोषित किए गए। इन परिणामों से राज्य की शैक्षणिक पण्राली में व्याप्त भ्रष्टाचार का पता चलता है। अपर्याप्त स्कूली ढांचा, एकल शिक्षक स्कूलों की मौजूदगी, बड़े पैमाने पर शिक्षकों का स्कूलों से अनुपस्थित रहना, बड़े पैमाने पर शिक्षकों के रिक्त स्थान, लाइब्रेरी और प्रयोगशालाओं की कमी, फर्जी पंजीकरण और स्कूलों से गायब रहने की बड़ी संख्या जैसी अनेक पण्रालीगत समस्याओं का सामना राज्य को करना पड़ रहा है। इतना ही नहीं संयुक्त राष्ट्र ने 2004 में शिक्षा के जो दो मानक परिभाषित किए थे, उनसे तो बिहार कोसों दूर है। दो मानक हैं-शिक्षण से अर्जन का ज्ञान और खेल समिति, नाटक समिति, संसदीय समिति, वाद-विवाद समिति, भ्रमण समिति आदि जैसे मंचों के साथही शिक्षणोत्तर गतिविधियों के जरिए जीवन जीने के तौर-तरीकों की पहचान। इन पैमानों के बरक्स और शिक्षा का कानून, 2009 में उल्लिखित निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षण के मौलिक अधिकार के मद्देनजर बिहार कहीं दूर जा छिटका है। शिक्षा का कानून के बनाए जाने के नौ वर्ष पश्चात प्रथम ने शिक्षा की स्थिति पर ग्याहरवीं वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की है। इससे पता चलता है कि राज्य सरकार के मंसूबे और प्रदर्शन के बीच बड़ी खाई है। बुनियादी शिक्षा क्षेत्र की स्थिति ही खासी चिंताजनक है। प्राथमिक विद्यालयों में आवश्यकता से 38 प्रतिशत कम शिक्षक हैं, और मोटा-मोटी तीन लाख शिक्षकों का अभाव है। शिक्षा पण्राली को लेकर विभ्रमित दृष्टिकोण के चलते राज्य की अपनी युवा आबादी को शिक्षित-प्रशिक्षित करने की तैयारी नहीं दिखती। जब हम बच्चों के समग्र एवं सर्वागीण विकास की दृष्टि से स्कूली ढांचागत सुविधाओं और उनकी विभिन्न समितियों का विश्लेषण करते हैं, तो पाते हैं कि शिक्षित-प्रशिक्षित शिक्षकों, खेल के मैदानों, प्रयोगशालाओं, लाइब्रेरी, बिजली, शौचालयों आदि के मामले में बिहार लकवाग्रस्त दिखाईदेता है। माध्यमिक स्तर के स्कूलों में प्रति कक्षा में 97 छात्र पढ़ते हैं। नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन (एनयूईपीए) के एक हालिया सव्रेक्षण से पता चला है कि बिहार में सभी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक दसवीं जमात तक पढ़े हैं। इतना ही नहीं इन स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं को घोर अभाव है।

छात्रों को बेहतर जीवन जीने के तौर-तरीके सिखाने वाली समितियों और सभाओं की मौजूदगी की बाबत कोईजानकारी नहीं मिलती। समय आ गया है कि बिहार की शिक्षा पण्राली में नये सिरे से जान फूंकी जाए। शिक्षा पण्राली की दुर्दशा ने बिहार की छवि को बिगाड़ कर रख दिया है। जरूरी हो गया है कि बदलती स्थितियों के मद्देनजर अपनी भूलों और संसाधनों के अभाव का विश्लेषण करके राज्य का तेजी से विकास करे। केंद्रीय मंत्री उपेन्द्र कुशवाहा का कहना है कि निरक्षरता सामाजिक बुराईहै। इसका खात्मा करना ही होगा। तभी गरीबी, कुपोषण, भूख, बीमारी, बेरोजगारी और बोझबने संस्थानों से निजात मिल सकेगी।

दिसम्बर में शादी करेंगे विराट और अनुष्का!

खेल डेस्क। भारतीय कप्तान विराट कोहली के प्रशंसकों के लिए अच्छी खबर है। आ रही खबरों के अनुसार टीम इंडिया की रन मशीन विराट कोहली और बॉलीवुड अभिनेत्री अनुष्का शर्मा दिसम्बर में शादी कर सकते हैं। बीसीसीआई के एक अधिकारी की मानें तो विराट ने भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड को सूचना दी है कि कुछ व्यक्तिगत कारणों की वजह से वह दिसंबर में उपलब्ध नहीं होंगे। बीसीसीआई के अधिकारी की इस बात तो यही कयास लगाए जा रहे हैं कि कोहली दिसंबर में शादी करने जा रहे हैं। इसलिए उन्होंने दिसम्बर में भारतीय बोर्ड से समय मांगा है। कोहली ने रविवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ अपने करियर के 200वें एकदिवसीय अन्तरराष्ट्रीय मैच में शतक लगाकर ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग को भी पीछे छोड़ दिया था। अपने 31वें शतक के माध्यम से उन्होंने 200वें वनडे में सर्वाधिक रन बनाने के दक्षिण अफ्रीका के एबी डिविलियर्स के विश्व रिकॉर्ड को भी तोड़ा था। विराट एकदिवसीय क्रिकेट में 200 मैच खेलने वाले भारत के 13वें बल्लेबाज हैं। उन्होंने इस उपलब्धि का जश्न 125 गेंदों में नौ चौकों और दो छक्कों की मदद से शानदार 121 रन बनाकर मनाया। विराट 200 वनडे में अब 31 शतक बना चुके हैं और उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के पोंटिंग को पीछे छोड़ दिया है जिनके 375 मैचों में 30 शतक हैं।

फुटबाल के सुपरपावर ब्राजील का सामना इंग्लैंड से

कोलकाता। फुटबाल की महाशक्ति ब्राजील का सामना फीफा अंडर 17 विश्व कप के सेमीफाइनल में कल आत्मविश्वास से ओतप्रोत इंग्लैंड से होगा तो फुटबाल के दीवाने इस शहर के लोगों को रोमांचक खेल की सौगात मिलने की गारंटी रहेगी। ब्राजील क्वार्टर फाइनल में जर्मनी से हारते से बाल बाल बचा। करीब 60000 दर्शकों के सामने खेले गए मैच में ब्राजील को गोल करने में 70 मिनट लगे। वेवरसन और पोलिन्हो के दो गोल की मदद से ब्राजील ने जीत दर्ज की जबकि जर्मनी ने पहले हाफ में ही बढत बना ली थी। एक बार फिर साल्टलेक स्टेडियम पर हजारों की तादाद में दर्शक ब्राजील के साथ होंगे। पेले की 1977 की कोलकाता यात्रा के बाद से यहां के फुटबालप्रेमी हमेशा से ब्राजील के समर्थक रहे हैं। बारिश के कारण पिच खराब होने से ऐन मौके पर यह मैच गुवाहाटी से कोलकाता को दिया गया है इससे दोनों टीमों के खिलाड़ियों को परेशानी जरूर हुई क्योंकि वे गुवाहाटी पहुंच गए थे और उन्हें कुछ घंटे में ही कोलकाता की फ्लाइट लेनी पड़ी। इंग्लैंड ने तीन ग्रुप मैच और प्री क्वार्टर फाइनल यहां खेला जिसके बाद क्वार्टर फाइनल खेलने मडगांव गई थी। क्वार्टर फाइनल में अमेरिका को 4-1 से हराने के बाद इंग्लैंड के हौसले बुलंद है। उसकी टीम में इंग्लिश प्रीमियर लीग क्लबों के कई युवा खिलाड़ी हैं। अभी तक उसने टूर्नामेंटमें तीन ही गोल गंवाये हैं लेकिन पोलिन्हो, लिंकन, एलेन और बेनेर के सामने इस प्रदर्शन को बरकरार रख पाना मुश्किल होगा।

स्पेन और माली के बीच फुटबाल की जुदा शैलियों की टक्कर

नयी मुंबई। कलात्मक खेल का महारथी स्पेन फीफा अंडर 17 विश्व कप सेमीफाइनल में आक्रामक तेवरों वाले माली से भिड़ेगा तो यह फुटबाल की दो अलग अलग शैलियों का मुकाबला होगा। यूरो अंडर 17 चैम्पियन स्पेन टिकी टाका यानी छोटे छोटे पास वाली फुटबाल खेलता है जबकि अफ्रीकी चैम्पियन माली मुक्तप्रवाह वाले आक्रामक खेल का जादूगर है। दोनों टीमें पहला मैच हारने के बाद क्वार्टर फाइनल में पहुंची। स्पेन को पहले मैच में दक्षिण अमेरिकी चैम्पियन ब्राजील ने हराया जबकि माली को लातिन अमेरिकी प्रतिद्वंद्वी पराग्वे ने मात दी। स्पेन ने अधिकांश मैच कंट्रोल में खेले हैं जबकि माली डी वाय पाटिल स्टेडियम पर खेल चुका है। माली के पिछले दोनों मैचों में बारिश हुई है।

घाना के खिलाफ क्वार्टर फाइनल में गुवाहाटी की गीली फील्ड पर खेलते हुए उसने जीत दर्ज की। तीन बार की यूरो अंडर 17 चैम्पियन स्पेन को अफ्रीकी प्रतिद्वंद्वी की रफ्तार का माकूल जवाब देना होगा। ब्राजील से हारने के बाद स्पेन ने नाइजर और उत्तर कोरिया को आसानी से हराया जबकि फ्रांस ने उसे कड़ी चुनौती दी लेकिन अबेल रूइज के पेनल्टी गोल पर उसने जीत दर्ज की। माली के डिफेंडरों को रूइज के अलावा ला रोजिता पर भी लगाम लगानी होगी। दूसरी ओर माली के लासाना एन डियाए अभी तक पांच गोल कर चुके हैं। उसके पास हादजी ड्रेम और जेमूसा टी जैसे खतरनाक स्ट्राइकर भी हैं।

क्रिस्टियानो रोनाल्डो को फीफा के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार

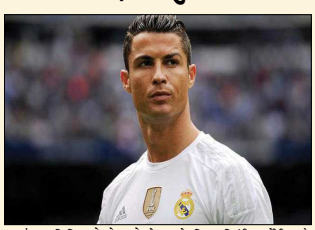

लंदन। क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने अपने चिर प्रतिद्वंद्वी अर्जेंटीना के लियोनेल मेस्सी को पछाड़कर पांचवीं बार फीफा के सर्वश्रेष्ठ फुटबालर का पुरस्कार जीता। रोनाल्डो की रीयाल मैड्रिड टीम ने पिछले सत्र में ला लिगा और चैम्पियंस लीग खिताब जीते। क्लब का हुए फीफा फुटबाल पुरस्कारों में दबदबा रहा। रोनाल्डो ने इस साल 48 मैचों में 44 गोल किये जिसमें युवेंटस के खिलाफ चैम्पियंस लीग फाइनल में 4-1 से मिली जीत में दो गोल शामिल थे।

रोनाल्डो को मेस्सी के अलावा पेरिस सेंट जर्मेन के नेमार से भी कड़ी चुनौती मिली। रीयाल मैड्रिड के मैनेजर जिनेदीन जिदान को वर्ष के सर्वश्रेष्ठ कोच का पुरस्कार मिला। उन्होंने चेलसी के अंतोनियो कोंटे और युवेंटस के मास्सिमिलियानो अलेग्री को पछाड़ा।युवेंटस के गोलकीपर जियांलुइगी बुफोन को सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर का पुरस्कार मिला।

टीम इंडिया को अपनी सरजमीं पर श्रृंखला हारने से बचने का दबाव

पुणे (एजेंसी)।

पहले मैच में मिली हार के बाद दबाव में आई भारतीय टीम को तीन मैचों की श्रृंखला में बने रहने के लिये कल आत्मविश्वास से भरी न्यूजीलैंड टीम को दूसरे एक दिवसीय क्रिकेट मैच में हर हालत में हराना होगा। पिछली छह द्विपक्षीय श्रृंखलायें जीत चुकी भारतीय टीम को अपनी सरजमीं पर ऐसे हालात का सामना कम ही करना पड़ता है जब उसे श्रृंखला बचाने के लिये करो या मरो का मुकाबला खेलना हो।

कप्तानों को अनुमान नहीं रहा होगा कि न्यूजीलैंड टीम वानखेड़े स्टेडियम पर पहले मैच में भारत को हरा देगी। चैम्पियंस ट्राफी के बाद पहला मैच खेल रही कीवी टीम ने हालांकि ऐसा कर दिखाया। रोस टेलर और टाम लाथम के बीच 200 रन की रिकार्ड साझेदारी के दम पर न्यूजीलैंड ने 281 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए जीत दर्ज की। उन्होंने स्पिनर कुलदीप यादव और युजवेंद्र चहल को बड़े आराम से खेला जबकि इससे पिछली श्रृंखला में आस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों को इन दोनों स्पिनरों को खेलने में दिक्कत आई थी। मेजबान टीम मुंबई में फार्म में नहीं दिखी लेकिन कल यहां वापसी कर सकती है।

विराट कोहली ने पिछले मैच में 31वां वनडे शतक जमाया लेकिन बाकी खिलाड़ियों से उन्हें सहयोग नहीं मिल सका। सलामी बल्लेबाज शिखर धवन और रोहित

शर्मा को ट्रेंट बोल्ट ने पवेलियन भेजा। अब इन दोनों को इस गेंदबाज की स्विंग और सटीकता का सामना करने के तरीके खोजने होंगे। भारतीय कप्तान अपनी लय बरकरार रखना चाहेंगे चूंकि बड़े स्कोर के लिये उनके बल्ले से रन निकलना जरूरी है। कोहली ने जनवरी में इस मैदान पर इंग्लैंड के खिलाफ मैच जिताउ पारी खेली थी। चौथा नंबर टीम प्रबंधन के लिये चिंता का सबब बना हुआ है। अभी तक 2015 विश्व कप के बाद 11 बल्लेबाजों को आजमाया जा चुका है। केदार जाधव रविवार को चौथे नंबर पर उतरे लेकिन नाकाम रहे।

पांचवें नंबर पर आये दिनेश कार्तिक ने वापसी के मैच में कप्तान कोहली के साथ 73 रन जोड़े लेकिन फिर अपना विकेट गंवा बैठे।महेंद्र सिंह धोनी जब बल्लेबाजी के लिये उतरे तो 20 से अधिक ओवर बाकी थे लेकिन वह 42 गेंद में 25 रन बनाकर आउट हो गए। गेंदबाजी में चहल और यादव ने मिलकर 125 रन दे डाले और सिर्फ एक विकेट लिया। दोनों अपनी गलतियों को सुधारकर बेहतर प्रदर्शन करने उतरेंगे। उन्हें टाम लाथम को स्वीप और रिवर्स स्वीप शाट खेलने से भी रोकना होगा। तेज गेंदबाजों में कोई बदलाव की उम्मीद नहीं है।दूसरी ओर शानदार जीत के बाद न्यूजीलैंड के हौसले बुलंद होंगे। कप्तान केन विलियमसन हालांकि अभ्यास मैच और पहले वनडे में रन नहीं बना सके जो बड़ी पारी खेलना चाहेंगे।

मार्टिन गुप्टिल और कोलिन मुनरो अच्छी शुरूआत को बड़ी पारियों में नहीं बदल सके थे और इस गलती को यहां सुधारना चाहेंगे। कीवी टीम मिशेल सेंटनेर के साथ ईश सोढी के रूप में दूसरा स्पिनर उतार सकती है।

टीमें- भारतः विराट कोहली (कप्तान), रोहित शर्मा, शिखर धवन, अजिंक्य रहाणे, मनीष पांडे, केदार जाधव, दिनेश कार्तिक, एम एस धोनी, हार्दिक पंड्या, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, युजवेंद्र चहल, जसप्रीत बुमरा, भुवनेश्वर कुमार और शरदुल ठाकुर।

न्यूजीलैंडः केन विलियमसन (कप्तान), ट्रेंट बोल्ट, कोलिन डे ग्रांडहोमे, मार्टिन गुप्टिल, मैट हेनरी, टाम लाथम, हेनरी निकोल्स, एडम मिल्ने, कोलिन मुनरो, ग्लेन फिलिप्स, मिशेल सेंटनेर, टिम साउदी, रॉस टेलर, जार्ज वर्कर, ईश सोढी।

मैच का समय : दोपहर 1-30 से।

जीतू, हीना को एयर पिस्टल मिश्रित टीम वर्ग में मिला स्वर्ण

नयी दिल्ली (एजेंसी)।

जीतू राय और हीना सिद्धू ने आईएसएसएफ विश्व कप फाइनल में यहां भारत को पहला स्वर्ण दिलाते हुए 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम स्पर्धा में बाजी मारी। राष्ट्रमंडल और एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता राय और पूर्व राष्ट्रमंडल खेल स्वर्ण पदक विजेता सिद्धू का मिश्रित टीम स्पर्धा में यह तीसरा स्वर्ण है। आईएसएसएफ विश्व कप में पहली बार आधिकारिक तौर पर मिश्रित टीम स्पर्धा को शामिल किया गया है।

इस साल विश्व कप में प्रायोगिक आधार पर इसे शामिल किया गया है। तोक्यो ओलंपिक 2020 में पहली बार मिश्रित टीम स्पर्धा को जोड़ा जायेगा। राय और सिद्धू क्वालीफाइंग दौर में शीर्ष रहकर फाइनल में पहुंचे और फ्रांस को हराकर स्वर्ण जीता। चीन को कांस्य पदक मिला।

टेस्ट और वनडे के लिए भारतीय टीम में होंगे अलग-अलग गेंदबाज

पुणे(एजेंसी)।

भारत के गेंदबाजी कोच भरत अरूण ने टेस्ट और वनडे के लिए अलग-अलग गेंदबाजों को रखने के संकेत दिए। उन्होंने स्पष्ट किया मोहम्मद शमी और उमेश यादव टेस्ट मैचों के लिए पहली पसंद हैं जबकि भुवनेश्वर कुमार और जसप्रीत बुमराह सीमित ओवरों के प्रारूप के लिए पहले विकल्प होंगे।

अरूण ने कहा कि शमी और यादव हमारे नंबर एक टेस्ट गेंदबाज हैं। भुवनेश्वर और बुमराह बेजोड़ हैं और उनके पास एकदिवसीय प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए हर तरह का कौशल है। उन्होंने न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे वनडे मैच की पूर्व संध्या पर पत्रकारों से कहा कि भारत जितनी अधिक क्रिकेट खेल रहा है उसे देखते हुए यह बेहद महत्वपूर्ण है कि हमारे पास गेंदबाजों का समूह हो ताकि हम जो भी मैच खेलें उसमें वे तरोताजा होकर उतरें। उमेश और शमी को टेस्ट क्रिकेट में प्राथमिकता देने के कारण टीम प्रबंधन चाहता है कि ये दोनों रणजी ट्रॉफी में खेलें।

अरूण ने कहा कि हम चाहेंगे कि ये गेंदबाज प्रथम श्रेणी क्रिकेट में खेलें। मोहम्द शमी और उमेश यादव प्रथम श्रेणी क्रिकेट में खेल रहे हैं और शमी (दो मैचों में दस विकेट) बंगाल की तरफ से काफी अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। भारतीय टीम के इस पूर्व तेज गेंदबाज ने कहा कि गेंदबाजों के काम के भार को नियंत्रित करना उनकी प्राथमिकता है।

उन्होंने कहा कि बहुत अधिक गेंदबाजी और बहुत कम गेंदबाजी गेंदबाजों के लिए अच्छा नहीं है। इसलिए यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि वे पर्याप्त गेंदबाजी करें और पर्याप्त मैच खेलें ताकि जब उनकी जरूरत पड़े तो फिट रहें। अरूण ने युवा स्पिनरों कुलदीप यादव और युजवेंद्र चहल की भी तारीफ की और कहा कि उन्होंने जिस तरह से प्रदर्शन किया है उससे वह खुश हैं।

तेंदुलकर ने कहा, कोहली की आक्रामकता भारत का मजबूत पक्ष बनी

मुंबई (एजेंसी)।

महान क्रिकेट सचिन तेंदुलकर ने कहा कि उन्होंने विराट कोहली में आक्रामकता की झलक उनके भारत के लिए पदार्पण करने के दौरान देखी थी और उनकी यह खूबी अब पूरी तीव्र में है। अपनी आक्रामकता के लिए पहचाने जाने वाले कोहली ने न्यूजीलैंड के खिलाफ अपने 200वें एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच में 31वां शतक जड़ा लेकिन टीम को हार का सामना करना पड़ा। तेंदुलकर ने कहा, ''टीम में आने के बाद से उसके (कोहली के) रवैये में बदलाव नहीं आया है। मैंने उसके अंदर यह चिंगारी देखी थी जो कई लोगों को पसंद नहीं थी और कई लोग थे जो इसके लिए उसकी आलोचना करते थे।'' उन्होंने कहा, ''और आज यह भारतीय टीम का मजबूत पक्ष बन गया है। उसमें काफी बदलाव नहीं आया लेकिन उसके आस पास के लोग बदल गए। उसका रवैया सिर्फ उसके प्रदर्शन के कारण बदला और एक खिलाड़ी के लिए यह महत्वपूर्ण है कि उसे खुद को जाहिर करने की स्वतंत्रता मिले।''

तेंदुलकर ने साथ ही कहा कि मौजूद भारतीय टीम इकाई के रूप में कहीं अधिक संतुलित है।

उन्होंने कहा, ''मुझे लगता है कि टीम में शानदार संतुलन है, कई स्पिनर हैं जो बल्लेबाजी कर सकते हैं, काफी तेज गेंदबाज हैं जो बल्लेबाजी कर सकते हैं। कल भुवनेश्वर (कुमार) ने जो किया वह हमने देखा, उसके और हार्दिक पंड्या जैसे लोग विदेशी दौरों पर टीम के संतुलन को बदलेंगे।'' तेंदुलकर और एक अन्य महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर रायल ओपेरा हाउस में पत्रकार राजदीप सरदेसाई की किताब 'डेमोक्रेसी इलेवन- दे ग्रेट इंडियन स्टोरी' के विमोचन के दौरान हर्षा भोगले के साथ चर्चा कर रहे थे। गावस्कर ने इस दौरान मंसूर अली खान पटौदी से जुड़े किस्सों को याद किया और पूर्व भारतीय कप्तान कपिल देव और अजित वाडेकर की उनकी नेतृत्व क्षमता के लिए तारीफ की। इस मौके पर पूर्व भारतीय कप्तान वाडेकर, मोहम्मद अजहरुद्दीन, माधव आप्टे, नारी कांट्रेक्टर, विनोद कांबली और प्रवीण आमरे भी मौजूद थे।

आईपीएल संचालन परिषद के प्रस्ताव से धोनी की वापसी हो सकती है आसान

नयी दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग की संचालन परिषद के एक प्रस्ताव के अनुसार अगले सत्र में वापसी को तैयार दागी टीमों चेन्नई सुपर किंग्स और राजस्थान रायल्स को पिछले दो साल में राइजिंग पुणे सुपरजाइंट्स और गुजरात लायंस की ओर से खेलने वाले खिलाड़ियों को रिटेन करने की स्वीकृति दी जा सकती है।अगले महीने होने वाली कार्यशाला में अगर फ्रेंचाइजियां इस पर राजी होती हैं तो इससे महेंद्र सिंह धोनी की चेन्नई सुपरकिंग्स में वापसी का रास्ता साफ हो सकता है। आईपीएल संचालन परिषद के सदस्य ने बैठक के बाद कहा, ''हम कम से कम तीन खिलाड़ियों को रिटेन करने का प्रस्ताव रखने वाले हैं। एक भारतीय और दो विदेशी। पिछले दो साल पुणे और गुजरात की ओर से खेलने वाले खिलाड़ियों को चेन्नई सुपर किंग्स और राजस्थान रायल्स द्वारा रिटेन किया जा सकता है। हम अगले महीने कार्यशाला के दौरान टीम मालिकों के सामने यह प्रस्ताव रखेंगे।''यह प्रस्ताव अगर स्वीकार होता है तो इसका मतलब हुआ है पिछले दो सत्र में पुणे सुपरजाइंट्स की ओर से खेलने वाले धोनी सौएसके द्वारा स्वत- ही रिटेन हो जाएंगे। गुजरात लायंस की ओर से खेलने वाले सुरेश रैना या रविंद्र जडेजा के साथ भी ऐसा ही है।आईपीएल अध्यक्ष राजीव शुक्ला से जब संपर्क किया गया तो उन्होंने बताया कि 'राइट टू मैच' सहित कुल रिटेन खिलाड़ियों की संख्या फ्रेंचाइजियों की सहमति के आधार पर तीन से पांच के बीच हो सकती है।पता चला है कि अधिकांश फ्रेंचाइजियां चाहती हैं कि कुल वेतन सीमा 60 करोड़ से बढ़ाकर 75 करोड़ रुपये कर दी जाए जबकि कुछ इसे 80 करोड़ रुपये करवाना चाहती हैं।अधिकारी ने कहा, ''अधिकांश फ्रेंचाइजी वेतन सीमा 75 करोड़ रुपये कराना चाहती हैं। मुझे लगता है कि ऐसा हो जाएगा।

बीसीसीआई को कोच्चि टस्कर्स को देना होगा भारी मुआवजा

नयी दिल्ली। बीसीसीआई को आईपीएल की पूर्व टीम कोच्चि टस्कर्स केरला को 800 करोड़ रूपये से अधिक का मुआवजा देना होगा जिसका अनुबंध 2011 में रद्द कर दिया गया था। आईपीएल चेयरमैन राजीव शुक्ला ने बैठक के बाद कहा,''कोच्चि टस्कर्स ने 850 रूपये मुआवजा मांगा है। हमने आईपीएल की संचालन परिषद की बैठक में इस पर चर्चा की। अब मसला आमसभा की बैठक में रखा जायेगा। वे फैसला लेंगे लेकिन मामले पर बातचीत की जरूरत है।''कोच्चि टस्कर्स के मालिकों ने 2015 में बीसीसीआई के खिलाफ पंचाट में मामला जीता था जिसमें अनुबंध के उल्लंघन को लेकर बैंक गारंटी भुनाने के बीसीसीआई के फैसले को चुनौती दी गई थी। आर सी लाहोटी की अध्यक्षता वाली पेनल ने बीसीसीआई को मुआवजे के तौर पर 550 करोड़ रूपये चुकाने के निर्देश दिये थे और ऐसा नहीं करने पर सालाना 18 प्रतिशत दंड लगाया जाना था। पिछले दो साल से बीसीसीआई ने ना तो मुआवजा चुकाया और ना ही टीम को आईपीएल में वापिस लिया। आईपीएल संचालन परिषद के एक सदस्य ने कहा,''हमें कोच्चि को मुआवजा देना होगा। सभी कानूनी विकल्पों पर चर्चा हो चुकी है। आम तौर पर पंचाट का फैसला खिलाफ आने पर इस उच्चतम न्यायालय में चुनौती देना बेबकूफी होती है। हमारे पास कोई विकल्प नहीं है लेकिन सवाल यह है कि रकम कितनी होगी।'' कोच्चि का करार रद्द करने का फैसला बीसीसीआई के तत्कालीन अध्यक्ष शशांक मनोहर ने लिया था। अधिकारी ने कहा, 'एक आदमी की जिद का खामियाजा हमें भुगतना पड़ रहा है। शशांक ने वह फैसला नहीं लिया होता तो हम कोई रास्ता निकाल लेते।

बल्ले के आकार में बदलाव का खेल पर असर होगा : राहुल द्रविड़

नयी दिल्ली (एजेंसी)।

पूर्व भारतीय कप्तान राहुल द्रविड़ ने कहा कि बल्ले की मोटाई सीमित करने को लेकर आईसीसी के नये नियमों का क्रिकेट के खेल पर असर होगा।नये नियमों के तहत बल्ले की मोटाई को सीमित किया गया है। बल्ले और गेंद के बीच संतुलन बनाने की कवायद के तहत बल्ले की चौड़ाई 108 मिलीमीटर से अधिक नहीं होगी जबकि किनारों पर इसकी मोटाई 40 मिलीमीटर और बीच में 67 मिलीमीटर से अधिक नहीं होगी।

द्रविड़ ने कहा, ''हां, इसका (बल्ले के आकार में बदलाव का) असर होगा। खेल के नतीजों पर असर पड़ेगा। हालांकि बदलाव काफी बड़े नहीं है क्योंकि कुछ ही खिलाड़ी हैं जो ऐसे बल्लों का इस्तेमाल करते हैं तो नये नियमों के तहत नहीं आते। यह अच्छा फैसला है।'' दायें हाथ के इस पूर्व बल्लेबाज ने हालांकि कहा कि बल्ले के आकार के अलावा भी कई ऐसे चीजें है जो खेल को प्रभावित करती हैं। भारतीय महिला टीम की कप्तान मिताली राज और पूर्व कप्तान झूलन गोस्वामी के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम के दौरान द्रविड़ ने कहा, ''पिच की प्रकृति और बाउंड्री का आकार भी मायने रखता है।''

आईसीसी ने खेलने के हालात में कई बदलाव किए हैं जिसमें बल्ले के आकार को सीमित करना भी शामिल है जिससे डेविड वार्नर जैसे बल्लेबाजों को अपने बल्ले में बदलाव करने को बाध्य होना होगा। यह पूछने पर कि क्या वह भविष्य में भारतीय महिला टीम को कोचिंग देना चाहेंगे, भारत ए और अंडर 19 पुरुष टीम के कोच द्रविड़ ने कहा कि महिला टीम के पास पहले ही सर्वश्रेष्ठ सहयोगी स्टाफ है। कार्यक्रम के दौरान मिताली ने अपने बचपन और क्रिकेट करियर के अनुभव साझा किए।

महिला आईपीएल टूर्नामेंट के फायदों पर द्रविड़ ने कहा, ''हां, यह अच्छा विचार है। इससे खिलाड़ियों का बड़ा पूल बनेगा तथा घरेलू और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को फायदा होगा।'' मिताली को हालांकि मलाल है कि

आस्ट्रेलिया के खिलाफ 2005 महिला विश्व कप के फाइनल का वीडियो मौजूद नहीं है। इस मैच में मिताली ने टीम की अगुआई की थी लेकिन आस्ट्रेलिया चैंपियन बना था।

11 महीने के अनुबंध आधारित कर्मयोगियों को मिलेगी अतिरिक्त लाभ : उप मुख्यमंत्री

बोर्ड, कॉपीरेशन, निगम और ग्रांट-इन-एड जैसी संस्थाओं के हजारों कर्मचारियों को मिलेगा लाभ

गांधीनगर । उप मुख्यमंत्री नितिनभाई पटेल ने कहा कि राज्य सरकार के विविध कार्यालयों, बोर्ड, कॉपोरेशन, निगम, ग्रांट-इन-एड संस्थाओं, सोसायटी एक्ट के तहत पंजीकृत हुई संस्थाओं में किसी प्रोजेक्ट या मिशन के अंतर्गत अथवा अन्य कार्य के लिए 11 महीने के अनुबंध आधारित हजारों कर्मचारी सेवारत हैं। इन कर्मचारियों के हित में उन्हें मिलने वाले लाभों में बढ़ोतरी करने का मुद्दा पिछले कुछ समय से राज्य सरकार के विचाराधीन था। नितिन पटेल ने कहा कि हाल ही में राज्य सरकार ने 11 महीने के कर्मयोगियों के हित में महत्वपूर्ण निर्णय करते हुए अनुबंध आधारित कर्मयोगियों को 250 रुपये तक का दैनिक यात्रा भत्ता, वर्ष के दौरान आकस्मिक परिस्थितियों के लिए 11 अतिरिक्त छुट्टियां, महिला कर्मचारियों को 1 वर्ष की अनुबंध अवधि के बाद अधिकतम 90 दिनों का मातृत्व अवकाश और कर्मचारी की चालु नौकरी के दौरान दुर्घटना या प्राकृतिक मौत होने के मामले में 2,00,000 रुपये की मृत्यु सहायता तथा 11 महीने के अनुबंध का समय पूरा होने पर उसके बाद नियुक्ति की मियाद बढ़ाने पात्र मामले में अधिक से अधिक 15 दिनों की समय सीमा में अनिवार्य रूप से नियुक्ति को बढ़ाने का आदेश सुनिश्चित करना होगा। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान सरकार ने सभी कर्मचारियों की पर्याप्त चिंता करते हुए आवश्यक लाभ देने का निर्णय किया है। इसके तहत 11 महीने के अनुबंध आधारित नियुक्त हजारों कर्मचारियों को अधिक लाभ मुहैया कराने के लिए अनेक निर्णय किए हैं। जिन कर्मचारियों का मासिक फिक्स वेतन 20,000 रुपये तक है, उन्हें नौकरी के दौरान 6 घंटे से अधिक लेकिन 12 घंटे से कम ठहराव पर 100 रुपये और 12 घंटे से अधिक के लिए 150 रुपये दैनिक भत्ता मिलने योग्य रहेगा। इसी तरह, राज्य परिवहन निगम का बस किराया या रेलवे से यात्रा करने की स्थिति में रेलवे की द्वितीय श्रेणी का सबसे छोटे रूट का किराया यात्रा व्यय के पेटे मिलने योग्य रहेगा। नितिन पटेल ने कहा कि जिन कर्मचारियों का मासिक फिक्स वेतन 20,001 से 40,001 रुपये तक का है, उन्हें सेवा के दौरान 6 घंटे से अधिक लेकिन 12 घंटे से कम ठहराव पर 150 रुपये और 12 घंटे से अधिक ठहरने पर 200 रुपये दैनिक भत्ता मिलने पात्र होगा। राज्य परिवहन निगम का बस किराया अथवा रेलवे से यात्रा करने पर रेलवे की द्वितीय श्रेणी का सबसे छोटे रूट का किराया यात्रा व्यय पेटे मिलने पात्र होगा। वहीं, जिन कर्मचारियों का मासिक फिक्स वेतन 40,001 से अधिक है, उन्हें नौकरी के दौरान 6 घंटे से अधिक परन्तु 12 घंटे से कम के ठहराव पर 200 रुपये और 12 घंटे से अधिक ठहरने पर 250 रुपये दैनिक भत्ता मिलने योग्य होगा। इसी तरह, राज्य परिवहन निगम का बस किराया अथवा रेलवे द्वारा यात्रा करने पर रेलवे की दूसरी श्रेणी का सबसे छोटे रूट का किराया यात्रा व्यय पेटे मिलने पात्र होगा। उप मुख्यमंत्री पटेल ने कहा कि कर्मचारियों को मिलने योग्य आकस्मिक छुट्टियों के अलावा अन्य आकस्मिक परिस्थितियों के लिए 11 अतिरिक्त वार्षिक छुट्टियां मिलेंगी। इन छुट्टियों के समय के दौरान नियमानुसार वेतन मिलने योग्य रहेगा। ये छुट्टियां अगले वर्ष में तब्दील नहीं की जा सकेंगी। इसके अलावा, महिला कर्मचारियों के मामले में एक वर्ष के अनुबंध समयकाल के पश्चात की अवधि में 90 दिनों का मातृत्व अवकाश (मेटरनीटी लीव) मिलने योग्य रहेगा। ये अवकाश दो बच्चों की सीमा में मिलने पात्र होगा। इन छुट्टियों के दौरान नियमानुसार वेतन मिलने पात्र होगा। इसके अतिरिक्त, एक वर्ष की अवधि की सेवाओं से पूर्व प्राप्त किया गया मातृत्व अवकाश बिना वेतन के माना जाएगा, जिसे मंजूर करने का अधिकार कार्यालय प्रमुख के पास होगा। उन्होंने कहा कि किसी कर्मचारी की नौकरी के दौरान दुर्घटना या प्राकृतिक मृत्यु होने के मामले में उनके परिवार (वैध उत्तराधिकारी) को 2,00,000 रुपये की मृत्यु सहायता मिलने पात्र होगी। श्री पटेल ने कहा कि 11 महीने के अनुबंध आधार पर कार्यरत कर्मचारियों के मामले में किसी कर्मचारी द्वारा अनियमितता या दुर्व्यवहार न किया गया हो, वित्तीय गबन के आरोप न हों, जिस योजना में कार्यरत हों वह बंद न होती हो तथा कर्मचारी द्वारा स्वेच्छा से इस्तीफा न दिया गया हो, मामले में 11 महीने के अनुबंध का समय पूरा होने के बाद, बढ़ाने पात्र होने की स्थिति में अधिक से अधिक 15 दिनों की समय सीमा में अनिवार्य रूप से नियुक्ति को बढ़ाने का आदेश सुनिश्चित करना होगा।

चुनाव के ऐलान से पहले गुजरात सरकार ने फिर खोला राहत का पिटारा

अहमदाबाद । गुजरात विधानसभा चुनाव से राज्य सरकार ने फिर एक बार राहतों का पिटारा खोल दिया है। पिछले काफी समय से आशा वर्करों की मांग को ध्यान में रखते हुए वेतन में 50 फीसदी का इजाफा किया है। वहीं किसानों, एससी-एसटी और ओबीसी वर्ग को लुभानेवाली घोषणाएं आज की हैं। गुजरात में सत्ता विरोधी लहर से जूझ रही भाजपा चाहती है कि चुनाव जितना हो सकें, देर से हों। क्योंकि जातिगत समीकरण अभी भाजपा के पक्ष में नहीं हैं और भाजपा जितना हो सकता है सरकारी योजनाओं के ज़रिए जनता को लुभाना चाहती है। भाजपा को लग रहा है कि जुलाई में जो माहौल उसके पक्ष में था, अब वैसी बात नहीं हैं। गुजरात में भारी बारिश के साथ आई बाढ़ के बाद राहत कार्यों से जनता संतुष्ट नहीं है, लोगों में गुस्सा है। ऐसे में भाजपा चाहती है कि सरकारी घोषणाएं के ज़रिए लोगों को मनाया जाए ख़ासकर पटेल वर्ग को। चुनावी कार्यक्रम घोषित होने पर चुनाव आचार संहिता लागू हो जाती है और सरकार के अधिकार बेहद सीमित हो जाते हैं। भाजपा सरकार आचार संहिता न लगने का पूरा फ़ायदा उठाने की कोशिश कर रही है। बीते पंद्रह दिनों में गुजरात में सरकार ने क़रीब सात-आठ हज़ार करोड़ रुपये की घोषणाएं की हैं। सबसे ज़्यादा पटेल समुदाय को लुभाने की कोशिश की गई है। इसके अलावा समाज के अन्य असंतुष्ट वर्गों को भी लुभाने की कोशिश की गई है। बीते रविवार को भी गुजरात कैबिनेट की अहम बैठक हुई और कई तरह के फ़ैसले लिए गए। गुजरात सरकार ने आज आशा वर्कर, शिक्षक, किसान, एससी-एसटी और ओबीसी वर्ग को लुभानेवाली घोषणाओं का ऐलान किया है। इसके अलावा करार आधारित कर्मचारियों के छुट्टियां और आवंटित जमीन के किराए में भी वृद्धि की है। पिछले काफी समय से चल रहे आशा वर्करों के आंदोलन को शांत करने के लिए सरकार ने उनके वेतन में 50 प्रतिशत का इजाफा किया है। जिसका सीधा लाभ 40 हजार आशा वर्करों को मिलेगा। इस घोषणा से सरकार पर रु. 58 करोड़ को बोझ पड़ेगा। वहीं 10 साल के कार्यरत शिक्षकों को भी सरकार ने चुनावी तोहफा दिया है। सरकार ने ऐसा कर्मचारियों को स्थायी करने का फैसला किया है। साथ ही टेट उत्तीर्ण करनेवाले शिक्षकों की छुट्टी नहीं करने का भी निर्णय किया है। राज्य सरकार ने एससी-एसटी और ओबीसी वर्ग के लिए आय सीमा में वृद्धि कर दी है। शहरी क्षेत्र के लिए रु. 1.50 लाख और ग्रामीण इलाकों के लिए रु. 1.20 लाख की है। इसके अलावा सरकार ने एक बार फिर किसानों के लिए राहत की घोषणा की है। जिसके मुताबिक टपक सिंचाई करने वाले किसानों को प्रोत्साहन देने के लिए उन्हें जीएसटी से मुक्ति दी है। मतलब किसानों को 18 फीसदी जीएसटी से मुक्त कर दिया गया है।

अशोक गहलोत ने लगाया बीजेपी पर जासूसी का आरोप

मामला हार्दिक पटेल तथा राहुल गांधी की मुलाकात की अटकलों का

अहमदाबाद । पाटीदार नेता हार्दिक पटेल तथा कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी के बीच सोमवार को मुलाकात होने की अटकलों के बीच कांग्रेस नेता अशोक गहलोत ने गुजरात पुलिस पर उनकी जासूसी करने तथा अहमदाबाद के उस होटल से सीसीटीवी फुटेज हासिल करने का आरोप लगाया है, जिसमें वह ठहरे हुए हैं। कुछ समाचार चैनलों ने राहुल गांधी से हुई खुफिया मुलाकात के सबूत के तौर पर हार्दिक पटेल का रात को लगभग दो बजे लिया गया सीसीटीवी फुटेज चलाया था। अशोक गहलोत ने आरोप लगाया है कि गुजरात पुलिस तथा खुफिया एजेंसियों के अधिकारियों ने होटल से सीसीटीवी फुटेज हासिल किया, जहां वह दिनभर बैठकें करते हैं। उन्होंने ट्विटर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा उनके कार्यालय को टैग करते हुए ट्वीट किया, आईबी तथा पुलिस ने होटल से सीसीटीवी फुटेज क्यों लिए। मैं बीजेपी के आदेश पर की जा रही इस निगरानी की निंदा करता हूं। विधानसभा चुनाव का सामना करने जा रहे गुजरात के कांग्रेस प्रभारी ने कहा, उन्होंने सोमवार को उम्मेद होटल में ही दिनभर में हार्दिक पटेल तथा कई अन्य लोगों से मुलाकात की। उन्होंने ट्वीट किया, मैंने हार्दिक तथा जिग्नेश से उम्मेद होटल में मुलाकात की। आईबी और पुलिस होटल के कमरों की जांच कर रही हैं। गांधी जी के गुजरात में क्या हो रहा है। हार्दिक पटेल और जिग्नेश मेवानी अपराधी या भगोड़े हैं। अगर ऐसा है, तो बीजेपी को अपना रुख साफ करना चाहिए। जब वे बीजेपी नेताओं से मिलते हैं, तब उनके दफ्तरों की जांच नहीं की जाती। अब ऐसा क्यों किया जा रहा है। अशोक गहलोत ने यह भी आरोप लगाया कि उनके नाम से बुक किए गए कमरों की जांच की गई। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज मांगी थी, जो उन्हें सौंप दी गई। चैनलों ने लगभग उसी समय उस फुटेज को चला भी दिया था।

वेतन में 50 फीसदी की वृद्धि से खुश नहीं आशा वर्कर, हंगामा किया

वडोदरा । गुजरात सरकार ने आज ही आशा वर्करों के वेतन में 50 प्रतिशत की वृद्धि का ऐलान किया है। राज्य सरकार के फैसले को खारिज करते हुए आशा वर्करों ने अपना आंदोलन जारी रखने का ऐलान किया है। गुजरात में पिछले काफी समय से आशा वर्कर वेतन समेत अपने कई मांगों को लेकर आंदोलन कर रही हैं। चुनाव निकट देख गुजरात सरकार ने आज आशा वर्करों के वेतन में 50 प्रतिशत बढ़ाने का ऐलान किया है। लेकिन आशा वर्करों ने सरकार की इस घोषणा को लोलीपोप करार दिया और स्थायी नौकरी, समान काम-समान वेतन समेत लंबित मांगों को त्वरित समाधान करने की मांग के साथ वडोदरा कलेक्ट्रेट में हल्ला बोला।

पंचायत चुनाव भी नहीं जीत पाए थे अल्पेश

अब कांग्रेस ने बनाया अपना तारणहार

अहमदाबाद । गुजरात विधानसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान अभी भले ही न हुआ हो, लेकिन सियासी तलवारें खिंच चुकी हैं। बीजेपी सत्ता को बचाने की जद्दोजहद में लगी है, तो कांग्रेस उसी के तीरों से उसे घेरकर राज्य में अपना बनवास खत्म करने में। कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने गुजरात की सियासी जंग फतह करने के लिए तीन युवा चेहरों पर दांव लगाया है। इनमें सबसे पहले अल्पेश ठाकोर कांग्रेस के खेमे में आए हैं। अल्पेश ओबीसी समुदाय से आते हैं और युवा हैं तथा समुदाय के मुद्दों पर खासा सक्रिय रहे हैं, लेकिन चुनावी गणित अलग है। जिस अल्पेश पर राहुल गांधी ने सबसे पहले दांव लगाया है, वह एक समय जिला पंचायत का चुनाव भी नहीं जीत सके थे। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या कांग्रेस अपने 22 साल के सत्ता के वनवास को तोड़ पाएंगी। गुजरात में ओबीसी चेहरे के तौर पर पहचान बनाने वाले अल्पेश ठाकोर ने सोमवार को कांग्रेस का दामन थाम लिया। राहुल गांधी की मौजूदगी में अल्पेश कांग्रेस में शामिल हुए। उनकी कांग्रेस में दोबारा से वापसी हुई है। इससे पहले अल्पेश 2009 से 2012 तक कांग्रेस में रह चुके हैं। अल्पेश ठाकोर ने गुजरात विधानसभा चुनाव 2017 में कांग्रेस का तारणहार बनने के लिए वापसी की है, लेकिन 2012 के जिला पंचायत चुनाव में मांडल सीट से वह जीत नहीं सके थे। अल्पेश ने उस समय भी कांग्रेस के उम्मीदवार के तौर पर किस्मत आजमाई थी। इतना ही नहीं, तीन साल पहले भी वह कांग्रेस का प्रचार कर रहे थे। अल्पेश ठाकोर के पिता खोड़ाजी ठाकोर कांग्रेस के अहमदाबाद ग्रामीण के जिला अध्यक्ष रहे हैं। बता दें कि पिछले पांच साल में गुजरात का माहौल काफी बदला है। अल्पेश ठाकोर का पिछले पांच सालों में ग्राफ काफी बढ़ा है। उन्होंने अपना राजनीतिक ग्राफ बढ़ाने के लिए सामाजिक आंदोलन की राह पकड़ी। उन्होंने राज्य के ओबीसी समुदाय की 146 जातियों को एकजुट करने का बीड़ा उठाया और अवैध शराब के खिलाफ मुहिम छेड़ी। अल्पेश को इन जातियों का समर्थन उनकी नशा के खिलाफ छेड़ी गई मुहिम से ही मिला है। कहा जाता है कि अल्पेश कांग्रेस के साथ आने के पहले बीजेपी सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल चुके थे। पिछले साल एक रैली में उन्होंने यह ऐलान कर दिया था कि अगला मुख्यमंत्री बीजेपी से नहीं, बल्कि हमारा होगा। उनके पिता खोड़ाजी ठाकोर कांग्रेस से हैं। इसके पहले वे शंकर सिंह वाघेला के साथ बीजेपी से जुड़े थे, लेकिन बाद में वाघेला के कांग्रेस में जाने के बाद वे भी कांग्रेस में चले गए। अब वे कांग्रेस में हैं। मूलत: अहमदाबाद के एंडला गांव के रहने वाले अल्पेश समाज सेवा के अलावा खेती और रियल एस्टेट का व्यवसाय करते हैं, उनका गांव हार्दिक पटेल के चंदन नगरी से कुछ ही किलोमीटर दूर है। पांच साल पहले अल्पेश तब सुर्खियों में आए थे, जब उन्होंने गुजरात क्षत्रिय-ठाकोर सेना का गठन किया था। यह संगठन नशा मुक्ति के लिए काम करता है। आज भी इस संगठन में 6 15 लाख लोग रजिस्टर्ड है।

हाल ही में अल्पेश ने एकता मंच की स्थापना की। जिसके अंतर्गत ओबीसी, एससी, एसटी समुदाय के लोगों को उन्होंने अपने साथ जोड़ा। मालूम हो कि गुजरात में 22 से 24 प्रतिशत ठाकोर समुदाय के लोग हैं। देखना होगा कि चुनावी रण में अल्पेश कितने प्रभावी साबित होते हैं।

9 दिन में चार केले और 72 घंटे पानी नहीं पीने से जेल प्रशासन में हड़कंप

पूर्व जैन मुनि के भोजन और पानी के त्याग करने से जेल प्रशासन परेशान

सूरत । बड़ोदरा की एक युवती ने जैन मुनि शांति सागर पर दुष्कर्म के आरोप लगाए थे। उसके बाद न्यायालय द्वारा उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेजा गया था। जेल जाने के बाद से 9 दिन में उन्होंने केवल चार केले जेल में खाए हैं। शुक्रवार से उन्होंने जल ग्रहण करना भी छोड़ दिया है। लगातार 72 घंटे तक अन्न, जल और फल का त्याग करने से जेल प्रशासन में हड़कंप मच गया। जेल प्रशासन ने अधिवक्ता नीलेश शाह से आरोपी शांतिसागर से बात करने को कहा। शांतिसागर ने कहा कि मैं भूख हड़ताल पर नहीं हूं। यह हमारे साधु जीवन का एक हिस्सा है। साधु जीवन धारण करने के बाद वह कई-कई दिनों तक अन्न और जल नहीं लेते हैं। वह किसी किस्म की कोई हड़ताल नहीं कर रहे हैं। बहरहाल, लगातार अन्न, जल और फल का त्याग करने से जेल प्रशासन हैरत में है।

पास के नरेन्द्र पटेल ने भाजपा नेताओं के खिलाफ कोर्ट में की शिकायत

गांधीनगर । पाटीदार आरक्षण आंदोलन समिति (पास) नेता नरेन्द्र पटेल ने कैशकांड में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष समेत 6 लोगों के खिलाफ गांधीनगर की अदालत में शिकायत दर्ज करवाई है। नरेन्द्र पटेल की शिकायत से भाजपा की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। दो दिन पहले भाजपा में शामिल होने वाले मेहसाणा पास के नेता नरेन्द्र पटेल ने उसी दिन दो घंटों बाद पत्रकार परिषद में आरोप लगाया था कि भाजपा ने उन्हें एक करोड़ की ऑफर दी थी। जिसमें टोकन स्वरूप रु. 10 लाख रुपए दिए हैं और शेष रकम दूसरे दिन देने का वादा किया था। नरेन्द्र पटेल ने पत्रकार परिषद में रु. 500 के नोट के 20 बंडल भी पेश किए थे। साथ ही नरेन्द्र पटेल ने उनके पास पक्के सबूत होने का भी दावा किया था। वही नरेन्द्र पटेल ने अब गांधीनगर की अदालत में भाजपा नेताओं के खिलाफ शिकायत दर्ज करवा दी है। जिसमें नरेन्द्र पटेल ने विश्वासघात, ठगी और धमकी देने का आरोप लगाया है। शिकायत में नरेन्द्र पटेल ने कहा है कि भाजपा नेताओं ने उन्हें डरा धमकाकर पार्टी में शामिल किया था। नरेन्द्र पटेल के मुताबिक वरूण पटेल, महेश दाढ़ी उर्फ महेश पटेल, रवि पटेल के माध्यम से प्रदेश भाजपा अध्यक्ष जीतु वाघाणी, युवा मोर्चा के अध्यक्ष ऋत्विज पटेल और प्रदेश प्रवक्ता भरत पंड्या ने उनके खिलाफ फर्जी केस करने की धमकी दी थी। भाजपा ने आगामी विधानसभा चुनाव में पार्टी को फायदा दिलाने के लिए पास के अन्य लोगों को भाजपा से जोड़ने के लिए उन्हें एक करोड़ रुपए की रिश्वत की ऑफर की थी। जिसमें से टोकन स्वरूप रु. 10 लाख रुपए दिए भी थे। नरेन्द्र पटेल ने बताया कि इस डर और दबाव में आकर उन्हें भाजपा का भगवा धारण किया था। लेकिन बाद में जब पास नेता उनके पक्ष में खड़े हो गए तो उन्होंने भीडिया के समक्ष भाजपा की करतूतों का भांडा फोड़ दिया और टोकन स्वरूप दिए गए रु. 10 लाख भी पेश किए थे। नरेन्द्र पटेल ने अपनी शिकायत में वरूण पटेल को मुख्य आरोपी बताया है।

अल्पेश की ठाकोर सेना को 10से ज्यादा टिकट दे सकती है कांग्रेस

अहमदाबाद । सोमवार को गांधीनगर के रामकथा मैदान में राहुल गांधी की उपस्थिति में कांग्रेस में शामिल हुए ठाकोर सेना के अध्यक्ष अल्पेश ठाकोर ने अहमदाबाद समेत राज्यभर में 10 से ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ने का फैसला किया है। माना जा रहा है कि कांग्रेस अल्पेश की ठाकोर सेना को 10 से ज्यादा टिकट दे सकती है। अल्पेश ठाकोर ने आज स्पष्ट किया कि वे कांग्रेस में बिना किसी शर्त के शामिल हुए हैं। विधानसभा चुनाव में जीत के बाद मुझे या मेरे पिता खोडाजी ठाकोर को उप मुख्यमंत्री बनाने की कोई शर्त कांग्रेस के समक्ष नहीं रखी। कांग्रेस हाईकमांड ठाकोर सेना को किस सीट से टिकट देता है, इसका फैसला हाईकमांड करेगा। अल्पेश ने कहा कि अब तक चुनाव लड़ने के लिए कोई सीट चुनी नहीं है। कांग्रेस के गुजरात प्रभारी अशोक गहलोत और प्रदेश अध्यक्ष भरतसिंह सोलंकी उम्मीदवार तय करने के लिए दिल्ली गए हैं। जहां वे दो दिनों तक गुजरात विधानसभा चुनाव के लिए उम्मीदवारों की चयन प्रक्रिया में शामिल होंगे। इसके अलावा बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं के साथ कांग्रेस में शामिल हुए अल्पेश ठाकोर को पार्टी में सम्मानजनक पद देने की भी पार्टी हाईकमांड से पेशकश करेंगे। इस बीच गुजरात प्रदेश मुख्यालय राजीव गांधी भवन में अल्पेश ठाकोर को स्वतंत्र ऑफीस उपलब्ध करवाने की कवायद तेज हो गई है।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा 4 ओ-ब्लाक आगम नवकार कॉम्प्लेक्ष सचीन रेल्वे स्टेशन के पास,सूरत, जि. सूरत, गुजरात से प्रकाशित, एवं तापीलोक पब्लिकेशन 152,153 श्री राम इंडस्ट्रीयल एरिया पांडेसरा सूरत 394210 से मुद्रत, फोन नं. 9879141480 संपादक सुरेश मौर्या (पी आर बी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी) E-mail: krantisamay@gmail.com